

Series HRK

कोड नं. **3/1**
Code No.

रोल नं.

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 15 हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 16 प्रश्न हैं ।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II

SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे

Time allowed : 3 hours

अधिकतम अंक : 90

Maximum Marks : 90

सामान्य निर्देश :

- इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं— क, ख, ग और घ ।
- चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

लोकतंत्र के मूलभूत तत्त्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते हैं कि सब कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से ज़िम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव-शक्ति अभी खरटि लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोगी बनाने के बदले आज बोझरूप बन बैठी है। लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जाग्रत करना है। किसी भी देश को महान् बनाते हैं उसमें रहने वाले लोग। लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी ज़िम्मेदारी से बचते रहे हैं। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ़-सफ़ाई की बात हो, जहाँ-तहाँ हम लोगों को गंदगी फैलाते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलाते देख सकते हैं। फिर चाहते हैं कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे।

सरकार ने बहुत सारे कार्य किए हैं, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खोली हैं, विशाल बाँध बनवाए हैं, फ़ौलाद के कारख़ाने खोले हैं आदि-आदि बहुत सारे काम सरकार के द्वारा हुए हैं। पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है।

वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ-बूझ के साथ अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन-सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू करें। और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गाँववाले बड़ी-बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात ज़रूर समझ सकेंगे कि अपने गाँव में कहाँ कुआँ चाहिए, कहाँ सिंचाई की ज़रूरत है, कहाँ पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते हैं।

- (क) लोकतंत्र का मूलभूत तत्त्व है
- कर्तव्यपालन
 - लोगों का राज्य
 - चुनाव
 - जनमत
- (ख) किसी देश की महानता निर्भर करती है
- वहाँ की सरकार पर
 - वहाँ के निवासियों पर
 - वहाँ के इतिहास पर
 - वहाँ की पूँजी पर
- (ग) सरकार के कामों के बारे में कौन-सा कथन सही *नहीं* है ?
- वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ बनवाई हैं ।
 - विशाल बाँध बनवाए हैं ।
 - वाहन-चालकों को सुधारा है ।
 - फ़ौलाद के कारखाने खोले हैं ।
- (घ) सरकारी व्यवस्था में किस कमी की ओर लेखक ने संकेत किया है ?
- गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की भूमिका को नकारना
 - योजनाएँ ठीक से न बनाना
 - आधुनिक जानकारी का अभाव
 - ज़मीन से जुड़ी समस्याओं की ओर ध्यान न देना
- (ङ) “झकझोर कर जागृत करना” का भाव गद्यांश के अनुसार होगा
- नींद से जगाना
 - सोने न देना
 - ज़िम्मेदारी निभाना
 - ज़िम्मेदारियों के प्रति सचेत करना

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

हरियाणा के पुरातत्त्व-विभाग द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी ईसा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी।

अब तक यही माना जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मुअनजोदड़ो ही सिंधुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गाँव में खुदाई और शोध का काम रुक-रुक कर चल रहा है। हिसार का यह गाँव दिल्ली से मात्र एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ 1963 में खुदाई हुई थी और तब इसे सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर माना गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थीं कि यहाँ दबे नगर, कभी मुअनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़ा रहा होगा।

अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि राखीगढ़ी, भारत-पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार समुचित रूप से नियोजित इस शहर की सभी सड़कें 1.92 मीटर चौड़ी थीं। यह चौड़ाई कालीबंगा की सड़कों से भी ज़्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिह्न मिले हैं, जहाँ संभवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके अलावा टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएँ ताँबे के बर्तन और कुछ प्रतिमाएँ और एक 'फ़र्नेस' के अवशेष भी मिले हैं।

मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत-स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है।

राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्त्व विशिष्ट है। इस समय यह क्षेत्र पूरे विश्व के पुरातत्त्व विशेषज्ञों की दिलचस्पी और जिज्ञासा का केंद्र बना हुआ है। यहाँ बहुत से काम बकाया हैं; जो अवशेष मिले हैं, उनका समुचित अध्ययन अभी शेष है। उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

- (क) अब सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर किसे मानने की संभावनाएँ हैं ?
- (i) मुअनजो दड़ो
 - (ii) राखीगढ़ी
 - (iii) हड़प्पा
 - (iv) कालीबंगा
- (ख) चौड़ी सड़कों से स्पष्ट होता है कि
- (i) यातायात के साधन थे
 - (ii) अधिक आबादी थी
 - (iii) शहर नियोजित था
 - (iv) बड़ा शहर था
- (ग) इसे एशिया के 'विरासत-स्थलों' में स्थान मिला क्योंकि
- (i) नष्ट हो जाने का खतरा है
 - (ii) सबसे विकसित सभ्यता है
 - (iii) इतिहास में इसका नाम सर्वोपरि है
 - (iv) यहाँ विकास की तीन परतें मिली हैं
- (घ) पुरातत्त्व-विशेषज्ञ राखीगढ़ी में विशेष रुचि ले रहे हैं क्योंकि
- (i) काफ़ी प्राचीन और बड़ी सभ्यता हो सकती है
 - (ii) इसका समुचित अध्ययन शेष है
 - (iii) उत्खनन का कार्य अभी अधूरा है
 - (iv) इसके बारे में अभी-अभी पता लगा है
- (ङ) उपयुक्त शीर्षक होगा
- (i) राखीगढ़ी : एक सभ्यता की संभावना
 - (ii) सिंधु-घाटी सभ्यता
 - (iii) विलुप्त सरस्वती की तलाश
 - (iv) एक विस्तृत शहर राखीगढ़ी

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

एक दिन तने ने भी कहा था,
जड़ ? जड़ तो जड़ ही है;
जीवन से सदा डरी रही है,
और यही है उसका सारा इतिहास
कि ज़मीन में मुँह गड़ाए पड़ी रही है;
लेकिन मैं ज़मीन से ऊपर उठा,
बाहर निकला, बढ़ा हूँ,
मज़बूत बना हूँ, इसी से तो तना हूँ,

एक दिन डालों ने भी कहा था,
तना ? किस बात पर है तना ?
जहाँ बिठाल दिया गया था वहीं पर है बना;
प्रगतिशील जगती में तिल-भर नहीं डोला है
खाया है, मोटाया है, सहलाया चोला है;
लेकिन हम तने से फूटों, दिशा-दिशा में गयीं
ऊपर उठीं, नीचे आयीं
हर हवा के लिए दोल बनीं, लहराईं,
इसी से तो डाल कहलाई ।

(पत्तियों ने भी ऐसा ही कुछ कहा, तो ...)

एक दिन फूलों ने भी कहा था,

पत्तियाँ ? पत्तियों ने क्या किया ?

संख्या के बल पर बस डालों को छाप लिया,

डालों के बल पर ही चल-चपल रही हैं,

हवाओं के बल पर ही मचल रही हैं;

लेकिन हम अपने से खुले, खिले, फूले हैं –

रंग लिए, रस लिए, पराग लिए –

हमारी यश-गंध दूर-दूर-दूर फैली है,

भ्रमरों ने आकर हमारे गुन गाए हैं,

हम पर बौराए हैं ।

सब की सुन पाई है, जड़ मुसकराई है !

(क) तने का जड़ को जड़ कहने से क्या अभिप्राय है ?

(i) मज़बूत है

(ii) समझदार है

(iii) मूर्ख है

(iv) उदास है

(ख) डालियों ने तने के अहंकार को क्या कहकर चूर-चूर कर दिया ?

- (i) जड़ नीचे है तो यह ऊपर है
- (ii) यों ही तना रहता है
- (iii) उसका मोटापा हास्यास्पद है
- (iv) प्रगति के पथ पर एक कदम भी नहीं बढ़ा

(ग) पत्तियों के बारे में क्या **नहीं** कहा गया है ?

- (i) संख्या के बल से बलवान् हैं
- (ii) हवाओं के बल पर डोलती हैं
- (iii) डालों के कारण चंचल हैं
- (iv) सबसे बलशाली हैं

(घ) फूलों ने अपने लिए क्या **नहीं** कहा ?

- (i) हमारे गुणों का प्रचार-प्रसार होता है
- (ii) दूर-दूर तक हमारी प्रशंसा होती है
- (iii) हम हवाओं के बल पर झूमते हैं
- (iv) हमने अपना रूप-स्वरूप खुद ही सँवारा है

(ङ) जड़ क्यों मुसकराई ?

- (i) सबने अपने अहंकार में उसे भुला दिया
- (ii) फूलों ने पत्तियों को भुला दिया
- (iii) पत्तियों ने डालियों को भुला दिया
- (iv) डालियों ने तने को भुला दिया

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से,
ओ देशवासियो, रोओ मत तुम यों निर्झर से,
दरखास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से
वह सुनता है

गमज़दों और
रंजीदों की ।

जब सार सरकता-सा लगता जग-जीवन से
अभिषिक्त करें, आओ, अपने को इस प्रण से –
हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से
दुनिया ऊँचे

आदर्शों की,
उम्मीदों कीं

साधना एक युग-युग अंतर में ठनी रहे
यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे;
प्रार्थना एक युग-युग पृथ्वी पर बनी रहे
यह जाति

योगियों, संतों
और शहीदों की ।

(क) कवि देशवासियों को क्या कहना चाहता है ?

- (i) निराशा और जड़ता छोड़ो
- (ii) जागो, आगे बढ़ो
- (iii) पढ़ो, लिखो, कुछ करो
- (iv) डरो मत, ऊँचे चढ़ो

(ख) कवि किसकी और किससे प्रार्थना की बात कर रहा है ?

- (i) भगवान और जनता
- (ii) दुखी लोग और ईश्वर
- (iii) देशवासी और सरकार
- (iv) युवा वर्ग और ब्रिटिश सत्ता

(ग) कवि भारतीयों को कौन-सा संकल्प लेने को कहता है ?

- (i) हम भारत को कभी न मिटने देंगे
- (ii) जीवन में सार-तत्त्व को बनाए रखेंगे
- (iii) उच्च आदर्श और आशा के महत्त्व को बनाए रखेंगे
- (iv) जग-जीवन को समरसता से अभिषिक्त करेंगे

(घ) 'यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे' – का भाव है

- (i) इस भूमि पर बुद्ध और बापू ने जन्म लिया
- (ii) इस भूमि पर बुद्ध और बापू जैसे लोग जन्म लेते रहें
- (iii) यह धरती बुद्ध और बापू जैसी है
- (iv) यह धरती बुद्ध और बापू को हमेशा याद रखेगी

(ङ) कवि क्या प्रार्थना करता है ?

- (i) योगी, संत और शहीदों का हम सब सम्मान करें
- (ii) युगों-युगों तक यह धरती बनी रहे
- (iii) धरती माँ का वंदन करते रहें
- (iv) भारतीयों में योगी, संत और शहीद अवतार लेते रहें

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1×3=3
- (क) वे उन सब लोगों से मिले, जो मुझे जानते थे । (सरल वाक्य में बदलिए)
- (ख) पंख वाले चींटे या दीमक वर्षा के दिनों में निकलते हैं । (वाक्य का भेद लिखिए)
- (ग) आषाढ़ की एक सुबह एक मोर ने मल्हार के मियाऊ-मियाऊ को सुर दिया था ।
(संयुक्त वाक्य में बदलिए)
6. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए : 1×4=4
- (क) फुरसत में मैना खूब रियाज़ करती है । (कर्मवाच्य में)
- (ख) फ़ाख़्ताओं द्वारा गीतों को सुर दिया जाता है । (कर्तृवाच्य में)
- (ग) बच्चा साँस नहीं ले पा रहा था । (भाववाच्य में)
- (घ) दो-तीन पक्षियों द्वारा अपनी-अपनी लय में एक साथ कूदा जा रहा था । (कर्तृवाच्य में)
7. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए : 1×4=4
- मनुष्य केवल भोजन करने के लिए जीवित नहीं रहता है, बल्कि वह अपने भीतर की सूक्ष्म इच्छाओं की तृप्ति भी चाहता है ।
8. (क) निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर उनमें निहित रस पहचानकर लिखिए : 1×2=2
- (i) उपयुक्त उस खल को न यद्यपि मृत्यु का भी दंड है,
पर मृत्यु से बढ़कर न जग में दंड और प्रचंड है ।
अतएव कल उस नीच को रण-मध्य जो मारूँ न मैं,
तो सत्य कहता हूँ कभी शस्त्रास्त्र फिर धारूँ न मैं
- (ii) वह आता –
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक

- (ख) (i) शृंगार रस का स्थायी भाव लिखिए । 1
- (ii) निम्नलिखित काव्यांश में स्थायी भाव क्या है ? 1
- कब दूवै दाँत दूध कै देखौं, कब तोतैं, मुख बचन झरैं ।
कब नंदहिं बाबा कहि बोले, कब जननी कहि मोहिं ररै ।

खण्ड ग

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2+2+1=5

पुराने ज़माने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय न था । फिर नियमबद्ध प्रणाली का उल्लेख आदि पुराणों में न मिले तो क्या आश्चर्य ? और, उल्लेख उसका कहीं रहा हो, पर नष्ट हो गया हो तो ? पुराने ज़माने में विमान उड़ते थे । बताइए उनके बनाने की विद्या सिखाने वाला कोई शास्त्र ! बड़े-बड़े जहाज़ों पर सवार होकर लोग द्वीपांतरों को जाते थे । दिखाइए, जहाज़ बनाने की नियमबद्ध प्रणाली के दर्शक ग्रंथ ! पुराणादि में विमानों और जहाज़ों द्वारा की गई यात्राओं के हवाले देखकर उनका अस्तित्व तो हम बड़े गर्व से स्वीकार करते हैं, परंतु पुराने ग्रंथों में अनेक प्रगल्भ पंडिताओं के नामोल्लेख देखकर भी कुछ लोग भारत की तत्कालीन स्त्रियों को मूर्ख, अपढ़ और गँवार बताते हैं ।

- (क) पुराणों में नियमबद्ध शिक्षा-प्रणाली न मिलने पर लेखक आश्चर्य क्यों नहीं मानता ?
- (ख) जहाज़ बनाने के कोई ग्रंथ न होने या न मिलने पर लेखक क्या बताना चाहता है ?
- (ग) शिक्षा की नियमावली का न मिलना, स्त्रियों की अपढ़ता का सबूत क्यों नहीं है ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : 2×5=10

- (क) मन्नू भंडारी ने अपनी माँ के बारे में क्या कहा है ?
- (ख) अंतिम दिनों में मन्नू भंडारी के पिता का स्वभाव शक्की हो गया था, लेखिका ने इसके क्या कारण दिए ?
- (ग) बिस्मिल्ला खाँ को खुदा के प्रति क्या विश्वास है ?
- (घ) काशी में अभी-भी क्या शेष बचा हुआ है ?
- (ङ) कौसल्यायन जी के अनुसार सभ्यता के अंतर्गत क्या-क्या समाहित है ?

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2+2+1=5

तार सप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ

- (क) 'बैठने लगता है उसका गला' का क्या आशय है ?
(ख) मुख्य गायक को ढाढ़स कौन बँधाता है और क्यों ?
(ग) तार सप्तक क्या है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2×5=10

- (क) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को अपने चेहरे पर न रीझने की सलाह क्यों दी है ?
(ख) माँ का कौन-सा दुख प्रामाणिक था, कैसे ?
(ग) 'जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण' – कथन में कवि की वेदना और चेतना कैसे व्यक्त हो रही है ?
(घ) 'धनुष को तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा' – के आधार पर राम के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए ।
(ङ) काव्यांश के आधार पर परशुराम के स्वभाव की दो विशेषताओं पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए ।

13. 'आप चैन की नींद सो सकें इसीलिए तो हम यहाँ पहरा दे रहे हैं' – एक फ़ौजी के इस कथन पर जीवन-मूल्यों की दृष्टि से चर्चा कीजिए ।

5

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

10

(क) विज्ञापन की दुनिया

- विज्ञापन का युग
- भ्रमजाल और जानकारी
- सामाजिक दायित्व

(ख) भ्रष्टाचार-मुक्त समाज

- भ्रष्टाचार क्या है
- सामाजिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार
- कारण और निवारण

(ग) पी.वी. सिंधु – मेरी प्रिय खिलाड़ी

- अभ्यास और परिश्रम
- जुझारूपन और आत्मविश्वास
- धैर्य और जीत का सेहरा

15. अपनी दादी की चित्र-प्रदर्शनी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हुए उन्हें बधाई-पत्र लिखिए ।

5

अथवा

अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए प्राथमिक शिक्षक के पद के लिए अपने ज़िले के शिक्षा-अधिकारी को आवेदन-पत्र लिखिए ।

16. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए :

5

ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा । प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का यह अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है । उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी । शायद उस दिन वह मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा । तब तक इस बात से छोटे बच्चों को परिचित करा देना वांछनीय जान पड़ता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है । बृहत्तर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों को बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बाढ़ को रोकना मनुष्यत्व का तक्राज़ा । मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायास-बिना सिखाए-आ जाती है, वह पशुत्व का द्योतक है और अपने को संयत रखना, दूसरों के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है । बच्चे यह जानें तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं ।

Series HRK

कोड नं. **3/2**
Code No.

रोल नं.

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 15 हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 16 प्रश्न हैं ।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II

SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे

Time allowed : 3 hours

अधिकतम अंक : 90

Maximum Marks : 90

सामान्य निर्देश :

- इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं— क, ख, ग और घ ।
- चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

हरियाणा के पुरातत्त्व-विभाग द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी ईसा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी।

अब तक यही माना जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मुअनजोदड़ो ही सिंधुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गाँव में खुदाई और शोध का काम रुक-रुक कर चल रहा है। हिसार का यह गाँव दिल्ली से मात्र एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ 1963 में खुदाई हुई थी और तब इसे सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर माना गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थीं कि यहाँ दबे नगर, कभी मुअनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़ा रहा होगा।

अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि राखीगढ़ी, भारत-पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार समुचित रूप से नियोजित इस शहर की सभी सड़कें 1.92 मीटर चौड़ी थीं। यह चौड़ाई कालीबंगा की सड़कों से भी ज़्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिह्न मिले हैं, जहाँ संभवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके अलावा टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएँ ताँबे के बर्तन और कुछ प्रतिमाएँ और एक 'फ़र्नेस' के अवशेष भी मिले हैं।

मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत-स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है।

राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्त्व विशिष्ट है। इस समय यह क्षेत्र पूरे विश्व के पुरातत्त्व विशेषज्ञों की दिलचस्पी और जिज्ञासा का केंद्र बना हुआ है। यहाँ बहुत से काम बकाया हैं; जो अवशेष मिले हैं, उनका समुचित अध्ययन अभी शेष है। उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

- (क) अब सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर किसे मानने की संभावनाएँ हैं ?
- (i) मुअनजो दड़ो
 - (ii) राखीगढ़ी
 - (iii) हड़प्पा
 - (iv) कालीबंगा
- (ख) चौड़ी सड़कों से स्पष्ट होता है कि
- (i) यातायात के साधन थे
 - (ii) अधिक आबादी थी
 - (iii) शहर नियोजित था
 - (iv) बड़ा शहर था
- (ग) इसे एशिया के 'विरासत-स्थलों' में स्थान मिला क्योंकि
- (i) नष्ट हो जाने का खतरा है
 - (ii) सबसे विकसित सभ्यता है
 - (iii) इतिहास में इसका नाम सर्वोपरि है
 - (iv) यहाँ विकास की तीन परतें मिली हैं
- (घ) पुरातत्त्व-विशेषज्ञ राखीगढ़ी में विशेष रुचि ले रहे हैं क्योंकि
- (i) काफ़ी प्राचीन और बड़ी सभ्यता हो सकती है
 - (ii) इसका समुचित अध्ययन शेष है
 - (iii) उत्खनन का कार्य अभी अधूरा है
 - (iv) इसके बारे में अभी-अभी पता लगा है
- (ङ) उपयुक्त शीर्षक होगा
- (i) राखीगढ़ी : एक सभ्यता की संभावना
 - (ii) सिंधु-घाटी सभ्यता
 - (iii) विलुप्त सरस्वती की तलाश
 - (iv) एक विस्तृत शहर राखीगढ़ी

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

लोकतंत्र के मूलभूत तत्त्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते हैं कि सब कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से ज़िम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव-शक्ति अभी खरिटे लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोगी बनाने के बदले आज बोझरूप बन बैठी है। लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जाग्रत करना है। किसी भी देश को महान् बनाते हैं उसमें रहने वाले लोग। लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी ज़िम्मेदारी से बचते रहे हैं। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ़-सफ़ाई की बात हो, जहाँ-तहाँ हम लोगों को गंदगी फैलाते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलाते देख सकते हैं। फिर चाहते हैं कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे।

सरकार ने बहुत सारे कार्य किए हैं, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खोली हैं, विशाल बाँध बनवाए हैं, फ़ौलाद के कारख़ाने खोले हैं आदि-आदि बहुत सारे काम सरकार के द्वारा हुए हैं। पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है।

वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ-बूझ के साथ अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन-सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू कर दें। और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गाँववाले बड़ी-बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात ज़रूर समझ सकेंगे कि अपने गाँव में कहाँ कुआँ चाहिए, कहाँ सिंचाई की ज़रूरत है, कहाँ पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते हैं।

- (क) लोकतंत्र का मूलभूत तत्त्व है
- (i) कर्तव्यपालन
 - (ii) लोगों का राज्य
 - (iii) चुनाव
 - (iv) जनमत
- (ख) किसी देश की महानता निर्भर करती है
- (i) वहाँ की सरकार पर
 - (ii) वहाँ के निवासियों पर
 - (iii) वहाँ के इतिहास पर
 - (iv) वहाँ की पूँजी पर
- (ग) सरकार के कामों के बारे में कौन-सा कथन सही *नहीं* है ?
- (i) वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ बनवाई हैं ।
 - (ii) विशाल बाँध बनवाए हैं ।
 - (iii) वाहन-चालकों को सुधारा है ।
 - (iv) फ़ौलाद के कारख़ाने खोले हैं ।
- (घ) सरकारी व्यवस्था में किस कमी की ओर लेखक ने संकेत किया है ?
- (i) गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की भूमिका को नकारना
 - (ii) योजनाएँ ठीक से न बनाना
 - (iii) आधुनिक जानकारी का अभाव
 - (iv) ज़मीन से जुड़ी समस्याओं की ओर ध्यान न देना
- (ङ) “झकझोर कर जागृत करना” का भाव गद्यांश के अनुसार होगा
- (i) नींद से जगाना
 - (ii) सोने न देना
 - (iii) ज़िम्मेदारी निभाना
 - (iv) ज़िम्मेदारियों के प्रति सचेत करना

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

एक दिन तने ने भी कहा था,
जड़ ? जड़ तो जड़ ही है;
जीवन से सदा डरी रही है,
और यही है उसका सारा इतिहास
कि ज़मीन में मुँह गड़ाए पड़ी रही है;
लेकिन मैं ज़मीन से ऊपर उठा,
बाहर निकला, बढ़ा हूँ,
मज़बूत बना हूँ, इसी से तो तना हूँ,

एक दिन डालों ने भी कहा था,
तना ? किस बात पर है तना ?
जहाँ बिठाल दिया गया था वहीं पर है बना;
प्रगतिशील जगती में तिल-भर नहीं डोला है
खाया है, मोटाया है, सहलाया चोला है;
लेकिन हम तने से फूटीं, दिशा-दिशा में गयीं
ऊपर उठीं, नीचे आयीं
हर हवा के लिए दोल बनीं, लहराईं,
इसी से तो डाल कहलाईं ।

(पत्तियों ने भी ऐसा ही कुछ कहा, तो ...)

एक दिन फूलों ने भी कहा था,

पत्तियाँ ? पत्तियों ने क्या किया ?

संख्या के बल पर बस डालों को छाप लिया,

डालों के बल पर ही चल-चपल रही हैं,

हवाओं के बल पर ही मचल रही हैं;

लेकिन हम अपने से खुले, खिले, फूले हैं –

रंग लिए, रस लिए, पराग लिए –

हमारी यश-गंध दूर-दूर-दूर फैली है,

भ्रमरों ने आकर हमारे गुन गाए हैं,

हम पर बौराए हैं ।

सब की सुन पाई है, जड़ मुसकराई है !

(क) तने का जड़ को जड़ कहने से क्या अभिप्राय है ?

(i) मजबूत है

(ii) समझदार है

(iii) मूर्ख है

(iv) उदास है

(ख) डालियों ने तने के अहंकार को क्या कहकर चूर-चूर कर दिया ?

- (i) जड़ नीचे है तो यह ऊपर है
- (ii) यों ही तना रहता है
- (iii) उसका मोटापा हास्यास्पद है
- (iv) प्रगति के पथ पर एक कदम भी नहीं बढ़ा

(ग) पत्तियों के बारे में क्या **नहीं** कहा गया है ?

- (i) संख्या के बल से बलवान् हैं
- (ii) हवाओं के बल पर डोलती हैं
- (iii) डालों के कारण चंचल हैं
- (iv) सबसे बलशाली हैं

(घ) फूलों ने अपने लिए क्या **नहीं** कहा ?

- (i) हमारे गुणों का प्रचार-प्रसार होता है
- (ii) दूर-दूर तक हमारी प्रशंसा होती है
- (iii) हम हवाओं के बल पर झूमते हैं
- (iv) हमने अपना रूप-स्वरूप खुद ही सँवारा है

(ङ) जड़ क्यों मुसकराई ?

- (i) सबने अपने अहंकार में उसे भुला दिया
- (ii) फूलों ने पत्तियों को भुला दिया
- (iii) पत्तियों ने डालियों को भुला दिया
- (iv) डालियों ने तने को भुला दिया

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से,
ओ देशवासियो, रोओ मत तुम यों निर्झर से,
दरखास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से
वह सुनता है

गमज़दों और

रंजीदों की ।

जब सार सरकता-सा लगता जग-जीवन से

अभिषिक्त करें, आओ, अपने को इस प्रण से –

हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से

दुनिया ऊँचे

आदर्शों की,

उम्मीदों कीं

साधना एक युग-युग अंतर में ठनी रहे

यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे;

प्रार्थना एक युग-युग पृथ्वी पर बनी रहे

यह जाति

योगियों, संतों

और शहीदों की ।

(क) कवि देशवासियों को क्या कहना चाहता है ?

(i) निराशा और जड़ता छोड़ो

(ii) जागो, आगे बढ़ो

(iii) पढ़ो, लिखो, कुछ करो

(iv) डरो मत, ऊँचे चढ़ो

(ख) कवि किसकी और किससे प्रार्थना की बात कर रहा है ?

- (i) भगवान और जनता
- (ii) दुखी लोग और ईश्वर
- (iii) देशवासी और सरकार
- (iv) युवा वर्ग और ब्रिटिश सत्ता

(ग) कवि भारतीयों को कौन-सा संकल्प लेने को कहता है ?

- (i) हम भारत को कभी न मिटने देंगे
- (ii) जीवन में सार-तत्त्व को बनाए रखेंगे
- (iii) उच्च आदर्श और आशा के महत्त्व को बनाए रखेंगे
- (iv) जग-जीवन को समरसता से अभिषिक्त करेंगे

(घ) 'यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे' – का भाव है

- (i) इस भूमि पर बुद्ध और बापू ने जन्म लिया
- (ii) इस भूमि पर बुद्ध और बापू जैसे लोग जन्म लेते रहें
- (iii) यह धरती बुद्ध और बापू जैसी है
- (iv) यह धरती बुद्ध और बापू को हमेशा याद रखेगी

(ङ) कवि क्या प्रार्थना करता है ?

- (i) योगी, संत और शहीदों का हम सब सम्मान करें
- (ii) युगों-युगों तक यह धरती बनी रहे
- (iii) धरती माँ का वंदन करते रहें
- (iv) भारतीयों में योगी, संत और शहीद अवतार लेते रहें

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

1×3=3

- (क) जब सावन-भादों आते हैं तब दर्जिन की आवाज़ पूरे इलाक़े में गूँजती है ।
(सरल वाक्य में बदलिए)
- (ख) भुजंगा शाम को तार पर बैठकर पतिंगों को पकड़ता रहता है ।
(मिश्र वाक्य में बदलिए)
- (ग) अँधेरा होते-होते चौदह घंटों बाद कूजन-कुंज का दिन ख़त्म हो जाता है ।
(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

6. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए :

1×4=4

- (क) श्यामा सुबह-दोपहर के राग बख़ूबी गाती है । (कर्मवाच्य में)
- (ख) पक्षियों द्वारा संगीत का अभ्यास किया जाता है । (कर्तृवाच्य में)
- (ग) दर्द के कारण उससे चला नहीं जाता । (कर्तृवाच्य में)
- (घ) चोट के कारण वह बैठ नहीं सकती । (भाववाच्य में)

7. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

1×4=4

आज विज्ञान व परमाणु-युग में सबसे नाजुक प्रश्न शांति ही है ।

8. (क) निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर उनमें निहित रस पहचानकर लिखिए :

1×2=2

- (i) उपयुक्त उस खल को न यद्यपि मृत्यु का भी दंड है,
पर मृत्यु से बढ़कर न जग में दंड और प्रचंड है ।
अतएव कल उस नीच को रण-मध्य जो मारूँ न मैं,
तो सत्य कहता हूँ कभी शस्त्रास्त्र फिर धारूँ न मैं
- (ii) वह आता –
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक

(ख) (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है ?

1

सुत मुख देखि जसोदा फूली

हरषति देखि दूध की दँतिया, प्रेम मगन तन की सुधि भूली ।

(ii) करुण रस का स्थायी भाव लिखिए ।

1

खण्ड ग

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2+2+1=5

पुराने ज़माने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय न था । फिर नियमबद्ध प्रणाली का उल्लेख आदि पुराणों में न मिले तो क्या आश्चर्य ? और, उल्लेख उसका कहीं रहा हो, पर नष्ट हो गया हो तो ? पुराने ज़माने में विमान उड़ते थे । बताइए उनके बनाने की विद्या सिखाने वाला कोई शास्त्र ! बड़े-बड़े जहाज़ों पर सवार होकर लोग द्वीपांतरों को जाते थे । दिखाइए, जहाज़ बनाने की नियमबद्ध प्रणाली के दर्शक ग्रंथ ! पुराणादि में विमानों और जहाज़ों द्वारा की गई यात्राओं के हवाले देखकर उनका अस्तित्व तो हम बड़े गर्व से स्वीकार करते हैं, परंतु पुराने ग्रंथों में अनेक प्रगल्भ पंडिताओं के नामोल्लेख देखकर भी कुछ लोग भारत की तत्कालीन स्त्रियों को मूर्ख, अपढ़ और गँवार बताते हैं ।

(क) पुराणों में नियमबद्ध शिक्षा-प्रणाली न मिलने पर लेखक आश्चर्य क्यों नहीं मानता ?

(ख) जहाज़ बनाने के कोई ग्रंथ न होने या न मिलने पर लेखक क्या बताना चाहता है ?

(ग) शिक्षा की नियमावली का न मिलना, स्त्रियों की अपढ़ता का सबूत क्यों नहीं है ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2×5=10

(क) मन्नू भंडारी ने अपनी माँ के बारे में क्या कहा है ?

(ख) अंतिम दिनों में मन्नू भंडारी के पिता का स्वभाव शक्की हो गया था, लेखिका ने इसके क्या कारण दिए ?

(ग) बिस्मिल्ला खाँ को खुदा के प्रति क्या विश्वास है ?

(घ) काशी में अभी-भी क्या शेष बचा हुआ है ?

(ङ) कौसल्यायन जी के अनुसार सभ्यता के अंतर्गत क्या-क्या समाहित है ?

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2+2+1=5

तार सप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ

- (क) 'बैठने लगता है उसका गला' का क्या आशय है ?
(ख) मुख्य गायक को ढाढ़स कौन बँधाता है और क्यों ?
(ग) तार सप्तक क्या है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2×5=10

- (क) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को अपने चेहरे पर न रीझने की सलाह क्यों दी है ?
(ख) माँ का कौन-सा दुख प्रामाणिक था, कैसे ?
(ग) 'जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण' – कथन में कवि की वेदना और चेतना कैसे व्यक्त हो रही है ?
(घ) 'धनुष को तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा' – के आधार पर राम के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए ।
(ङ) काव्यांश के आधार पर परशुराम के स्वभाव की दो विशेषताओं पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए ।

13. 'आप चैन की नींद सो सकें इसीलिए तो हम यहाँ पहरा दे रहे हैं' – एक फ़ौजी के इस कथन पर जीवन-मूल्यों की दृष्टि से चर्चा कीजिए ।

5

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

10

(क) अनुशासित दिनचर्या

- जीवन में अनुशासन की अपेक्षा
- अनुशासित क्रियाकलाप का लाभ
- काम करें

(ख) प्राकृतिक आपदा – भूकंप

- प्राकृतिक आपदाएँ
- भूकंप से नुकसान
- बचाव के उपाय

(ग) ओलंपिक और भारत

- ओलंपिक खेल
- भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन
- सुधार के कदम

15. हाल में देखे हुए किसी नाटक की समीक्षा करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए ।

5

अथवा

विद्यालय में एक संगीत-सम्मेलन करने की अनुमति देने हेतु अपने प्रधानाचार्य से अनुरोध कीजिए ।

16. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए :

5

ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा । प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का यह अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है । उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी । शायद उस दिन वह मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा । तब तक इस बात से छोटे बच्चों को परिचित करा देना वांछनीय जान पड़ता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है । बृहत्तर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों को बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बाढ़ को रोकना मनुष्यत्व का तक्काज़ा । मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायास-बिना सिखाए-आ जाती है, वह पशुत्व का द्योतक है और अपने को संयत रखना, दूसरों के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है । बच्चे यह जानें तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं ।

Series HRK

कोड नं. **3/3**
Code No.

रोल नं.

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 15 हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 16 प्रश्न हैं ।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II

SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे

Time allowed : 3 hours

अधिकतम अंक : 90

Maximum Marks : 90

सामान्य निर्देश :

- इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं— क, ख, ग और घ ।
- चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

लोकतंत्र के मूलभूत तत्त्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते हैं कि सब कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से ज़िम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव-शक्ति अभी खरटि लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोगी बनाने के बदले आज बोझरूप बन बैठी है। लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जाग्रत करना है। किसी भी देश को महान् बनाते हैं उसमें रहने वाले लोग। लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी ज़िम्मेदारी से बचते रहे हैं। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ़-सफ़ाई की बात हो, जहाँ-तहाँ हम लोगों को गंदगी फैलाते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलाते देख सकते हैं। फिर चाहते हैं कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे।

सरकार ने बहुत सारे कार्य किए हैं, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खोली हैं, विशाल बाँध बनवाए हैं, फ़ौलाद के कारख़ाने खोले हैं आदि-आदि बहुत सारे काम सरकार के द्वारा हुए हैं। पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है।

वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ-बूझ के साथ अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन-सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू करें। और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गाँववाले बड़ी-बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात ज़रूर समझ सकेंगे कि अपने गाँव में कहाँ कुआँ चाहिए, कहाँ सिंचाई की ज़रूरत है, कहाँ पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते हैं।

- (क) लोकतंत्र का मूलभूत तत्त्व है
- (i) कर्तव्यपालन
 - (ii) लोगों का राज्य
 - (iii) चुनाव
 - (iv) जनमत
- (ख) किसी देश की महानता निर्भर करती है
- (i) वहाँ की सरकार पर
 - (ii) वहाँ के निवासियों पर
 - (iii) वहाँ के इतिहास पर
 - (iv) वहाँ की पूँजी पर
- (ग) सरकार के कामों के बारे में कौन-सा कथन सही *नहीं* है ?
- (i) वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ बनवाई हैं ।
 - (ii) विशाल बाँध बनवाए हैं ।
 - (iii) वाहन-चालकों को सुधारा है ।
 - (iv) फ़ौलाद के कारख़ाने खोले हैं ।
- (घ) सरकारी व्यवस्था में किस कमी की ओर लेखक ने संकेत किया है ?
- (i) गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की भूमिका को नकारना
 - (ii) योजनाएँ ठीक से न बनाना
 - (iii) आधुनिक जानकारी का अभाव
 - (iv) ज़मीन से जुड़ी समस्याओं की ओर ध्यान न देना
- (ङ) “झकझोर कर जागृत करना” का भाव गद्यांश के अनुसार होगा
- (i) नींद से जगाना
 - (ii) सोने न देना
 - (iii) ज़िम्मेदारी निभाना
 - (iv) ज़िम्मेदारियों के प्रति सचेत करना

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

हरियाणा के पुरातत्त्व-विभाग द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी ईसा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी।

अब तक यही माना जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मुअनजोदड़ो ही सिंधुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गाँव में खुदाई और शोध का काम रुक-रुक कर चल रहा है। हिसार का यह गाँव दिल्ली से मात्र एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ 1963 में खुदाई हुई थी और तब इसे सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर माना गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थीं कि यहाँ दबे नगर, कभी मुअनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़ा रहा होगा।

अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि राखीगढ़ी, भारत-पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार समुचित रूप से नियोजित इस शहर की सभी सड़कें 1.92 मीटर चौड़ी थीं। यह चौड़ाई कालीबंगा की सड़कों से भी ज़्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिह्न मिले हैं, जहाँ संभवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके अलावा टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएँ ताँबे के बर्तन और कुछ प्रतिमाएँ और एक 'फ़र्नेस' के अवशेष भी मिले हैं।

मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत-स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है।

राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्त्व विशिष्ट है। इस समय यह क्षेत्र पूरे विश्व के पुरातत्त्व विशेषज्ञों की दिलचस्पी और जिज्ञासा का केंद्र बना हुआ है। यहाँ बहुत से काम बकाया हैं; जो अवशेष मिले हैं, उनका समुचित अध्ययन अभी शेष है। उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

(क) अब सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर किसे मानने की संभावनाएँ हैं ?

- (i) मुअनजो दड़ो
- (ii) राखीगढ़ी
- (iii) हड़प्पा
- (iv) कालीबंगा

(ख) चौड़ी सड़कों से स्पष्ट होता है कि

- (i) यातायात के साधन थे
- (ii) अधिक आबादी थी
- (iii) शहर नियोजित था
- (iv) बड़ा शहर था

(ग) इसे एशिया के 'विरासत-स्थलों' में स्थान मिला क्योंकि

- (i) नष्ट हो जाने का खतरा है
- (ii) सबसे विकसित सभ्यता है
- (iii) इतिहास में इसका नाम सर्वोपरि है
- (iv) यहाँ विकास की तीन परतें मिली हैं

(घ) पुरातत्त्व-विशेषज्ञ राखीगढ़ी में विशेष रुचि ले रहे हैं क्योंकि

- (i) काफ़ी प्राचीन और बड़ी सभ्यता हो सकती है
- (ii) इसका समुचित अध्ययन शेष है
- (iii) उत्खनन का कार्य अभी अधूरा है
- (iv) इसके बारे में अभी-अभी पता लगा है

(ङ) उपयुक्त शीर्षक होगा

- (i) राखीगढ़ी : एक सभ्यता की संभावना
- (ii) सिंधु-घाटी सभ्यता
- (iii) विलुप्त सरस्वती की तलाश
- (iv) एक विस्तृत शहर राखीगढ़ी

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से,
ओ देशवासियो, रोओ मत तुम यों निर्झर से,
दरखास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से
वह सुनता है

गमज़दों और
रंजीदों की ।

जब सार सरकता-सा लगता जग-जीवन से
अभिषिक्त करें, आओ, अपने को इस प्रण से –
हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से
दुनिया ऊँचे

आदर्शों की,
उम्मीदों कीं

साधना एक युग-युग अंतर में ठनी रहे
यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे;
प्रार्थना एक युग-युग पृथ्वी पर बनी रहे
यह जाति

योगियों, संतों
और शहीदों की ।

(क) कवि देशवासियों को क्या कहना चाहता है ?

- (i) निराशा और जड़ता छोड़ो
- (ii) जागो, आगे बढ़ो
- (iii) पढ़ो, लिखो, कुछ करो
- (iv) डरो मत, ऊँचे चढ़ो

(ख) कवि किसकी और किससे प्रार्थना की बात कर रहा है ?

- (i) भगवान और जनता
- (ii) दुखी लोग और ईश्वर
- (iii) देशवासी और सरकार
- (iv) युवा वर्ग और ब्रिटिश सत्ता

(ग) कवि भारतीयों को कौन-सा संकल्प लेने को कहता है ?

- (i) हम भारत को कभी न मिटने देंगे
- (ii) जीवन में सार-तत्त्व को बनाए रखेंगे
- (iii) उच्च आदर्श और आशा के महत्त्व को बनाए रखेंगे
- (iv) जग-जीवन को समरसता से अभिषिक्त करेंगे

(घ) 'यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे' – का भाव है

- (i) इस भूमि पर बुद्ध और बापू ने जन्म लिया
- (ii) इस भूमि पर बुद्ध और बापू जैसे लोग जन्म लेते रहें
- (iii) यह धरती बुद्ध और बापू जैसी है
- (iv) यह धरती बुद्ध और बापू को हमेशा याद रखेगी

(ङ) कवि क्या प्रार्थना करता है ?

- (i) योगी, संत और शहीदों का हम सब सम्मान करें
- (ii) युगों-युगों तक यह धरती बनी रहे
- (iii) धरती माँ का वंदन करते रहें
- (iv) भारतीयों में योगी, संत और शहीद अवतार लेते रहें

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

एक दिन तने ने भी कहा था,
जड़ ? जड़ तो जड़ ही है;
जीवन से सदा डरी रही है,
और यही है उसका सारा इतिहास
कि ज़मीन में मुँह गड़ाए पड़ी रही है;
लेकिन मैं ज़मीन से ऊपर उठा,
बाहर निकला, बढ़ा हूँ,
मज़बूत बना हूँ, इसी से तो तना हूँ,

एक दिन डालों ने भी कहा था,
तना ? किस बात पर है तना ?
जहाँ बिठाल दिया गया था वहीं पर है बना;
प्रगतिशील जगती में तिल-भर नहीं डोला है
खाया है, मोटाया है, सहलाया चोला है;
लेकिन हम तने से फूट्टीं, दिशा-दिशा में गयीं
ऊपर उठीं, नीचे आयीं
हर हवा के लिए दोल बनीं, लहराईं,
इसी से तो डाल कहलाई ।

(पत्तियों ने भी ऐसा ही कुछ कहा, तो ...)

एक दिन फूलों ने भी कहा था,

पत्तियाँ ? पत्तियों ने क्या किया ?

संख्या के बल पर बस डालों को छाप लिया,

डालों के बल पर ही चल-चपल रही हैं,

हवाओं के बल पर ही मचल रही हैं;

लेकिन हम अपने से खुले, खिले, फूले हैं –

रंग लिए, रस लिए, पराग लिए –

हमारी यश-गंध दूर-दूर-दूर फैली है,

भ्रमरों ने आकर हमारे गुन गाए हैं,

हम पर बौराए हैं ।

सब की सुन पाई है, जड़ मुसकराई है !

(क) तने का जड़ को जड़ कहने से क्या अभिप्राय है ?

(i) मज़बूत है

(ii) समझदार है

(iii) मूर्ख है

(iv) उदास है

(ख) डालियों ने तने के अहंकार को क्या कहकर चूर-चूर कर दिया ?

- (i) जड़ नीचे है तो यह ऊपर है
- (ii) यों ही तना रहता है
- (iii) उसका मोटापा हास्यास्पद है
- (iv) प्रगति के पथ पर एक कदम भी नहीं बढ़ा

(ग) पत्तियों के बारे में क्या **नहीं** कहा गया है ?

- (i) संख्या के बल से बलवान् हैं
- (ii) हवाओं के बल पर डोलती हैं
- (iii) डालों के कारण चंचल हैं
- (iv) सबसे बलशाली हैं

(घ) फूलों ने अपने लिए क्या **नहीं** कहा ?

- (i) हमारे गुणों का प्रचार-प्रसार होता है
- (ii) दूर-दूर तक हमारी प्रशंसा होती है
- (iii) हम हवाओं के बल पर झूमते हैं
- (iv) हमने अपना रूप-स्वरूप खुद ही सँवारा है

(ङ) जड़ क्यों मुसकराई ?

- (i) सबने अपने अहंकार में उसे भुला दिया
- (ii) फूलों ने पत्तियों को भुला दिया
- (iii) पत्तियों ने डालियों को भुला दिया
- (iv) डालियों ने तने को भुला दिया

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1×3=3
- (क) डलिया में आम हैं, दूसरे फलों के साथ आम रखे हैं । (सरल वाक्य बनाइए)
- (ख) शर्मीला पीलक पेड़ के पत्तों में छुपकर बोलता है । (संयुक्त वाक्य बनाइए)
- (ग) पीलक जितना शर्मीला होता है उतनी ही इसकी आवाज़ भी शर्मीली है ।
(वाक्य-भेद लिखिए)
6. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए : 1×4=4
- (क) कुछ छोटे भूरे पक्षी मंच सँभाल लेते हैं । (कर्मवाच्य में)
- (ख) बुलबुल द्वारा रात्रि-विश्राम अमरूद की डाल पर किया जाता है । (कर्तृवाच्य में)
- (ग) तुम दिनभर कैसे बैठोगे ? (भाववाच्य में)
- (घ) सात सुरों को यह ग़ज़ब की विविधता के साथ प्रस्तुत करती है । (कर्मवाच्य में)
7. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए : 1×4=4
- मानव को इंसान बनाना अत्यंत ही कठिन कार्य है लेकिन असंभव नहीं ।
8. (क) निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर उनमें निहित रस पहचानकर लिखिए : 1×2=2
- (i) उपयुक्त उस खल को न यद्यपि मृत्यु का भी दंड है,
पर मृत्यु से बढ़कर न जग में दंड और प्रचंड है ।
अतएव कल उस नीच को रण-मध्य जो मारूँ न मैं,
तो सत्य कहता हूँ कभी शस्त्रास्त्र फिर धारूँ न मैं
- (ii) वह आता –
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक

- (ख) (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है ? 1
बाहर तैं तब नंद बुलाए देखौ धौं सुंदर सुखदाई ।
तनक-तनक सी दूध दंतुलिया देखौ, नैन सफल करौ आई ।
- (ii) हास्य रस का स्थायी भाव लिखिए । 1

खण्ड ग

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2+2+1=5

पुराने ज़माने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय न था । फिर नियमबद्ध प्रणाली का उल्लेख आदि पुराणों में न मिले तो क्या आश्चर्य ? और, उल्लेख उसका कहीं रहा हो, पर नष्ट हो गया हो तो ? पुराने ज़माने में विमान उड़ते थे । बताइए उनके बनाने की विद्या सिखाने वाला कोई शास्त्र ! बड़े-बड़े जहाज़ों पर सवार होकर लोग द्वीपांतरों को जाते थे । दिखाइए, जहाज़ बनाने की नियमबद्ध प्रणाली के दर्शक ग्रंथ ! पुराणादि में विमानों और जहाज़ों द्वारा की गई यात्राओं के हवाले देखकर उनका अस्तित्व तो हम बड़े गर्व से स्वीकार करते हैं, परंतु पुराने ग्रंथों में अनेक प्रगल्भ पंडिताओं के नामोल्लेख देखकर भी कुछ लोग भारत की तत्कालीन स्त्रियों को मूर्ख, अपढ़ और गँवार बताते हैं ।

- (क) पुराणों में नियमबद्ध शिक्षा-प्रणाली न मिलने पर लेखक आश्चर्य क्यों नहीं मानता ?
- (ख) जहाज़ बनाने के कोई ग्रंथ न होने या न मिलने पर लेखक क्या बताना चाहता है ?
- (ग) शिक्षा की नियमावली का न मिलना, स्त्रियों की अपढ़ता का सबूत क्यों नहीं है ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : 2×5=10

- (क) मन्नू भंडारी ने अपनी माँ के बारे में क्या कहा है ?
- (ख) अंतिम दिनों में मन्नू भंडारी के पिता का स्वभाव शक्की हो गया था, लेखिका ने इसके क्या कारण दिए ?
- (ग) बिस्मिल्ला खाँ को खुदा के प्रति क्या विश्वास है ?
- (घ) काशी में अभी-भी क्या शेष बचा हुआ है ?
- (ङ) कौसल्यायन जी के अनुसार सभ्यता के अंतर्गत क्या-क्या समाहित है ?

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2+2+1=5

तार सप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ

- (क) 'बैठने लगता है उसका गला' का क्या आशय है ?
- (ख) मुख्य गायक को ढाढ़स कौन बँधाता है और क्यों ?
- (ग) तार सप्तक क्या है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2×5=10

- (क) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को अपने चेहरे पर न रीझने की सलाह क्यों दी है ?
- (ख) माँ का कौन-सा दुख प्रामाणिक था, कैसे ?
- (ग) 'जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण' – कथन में कवि की वेदना और चेतना कैसे व्यक्त हो रही है ?
- (घ) 'धनुष को तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा' – के आधार पर राम के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए ।
- (ङ) काव्यांश के आधार पर परशुराम के स्वभाव की दो विशेषताओं पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए ।

13. 'आप चैन की नींद सो सकें इसीलिए तो हम यहाँ पहरा दे रहे हैं' – एक फ़ौजी के इस कथन पर जीवन-मूल्यों की दृष्टि से चर्चा कीजिए ।

5

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

10

(क) स्वच्छता की ओर बढ़े क़दम

- स्वच्छता की आवश्यकता
- स्वच्छता के प्रति जागरूकता
- नियम, क़ानून

(ख) आतंकवाद

- बढ़ता आतंकवाद
- भारत में आतंकवाद
- विश्व-स्तर पर आतंकवाद

(ग) एक मुलाक़ात महिला चैंपियन साक्षी मलिक से ...

- कैसे हुई भेंट
- हिम्मत और मेहनत
- आपकी राय

15. अपने विद्यालय में हुए संगीत समारोह पर टिप्पणी करते हुए माँ को पत्र लिखिए ।

5

अथवा

विद्यालयों में योग-शिक्षा का महत्त्व बताते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए ।

16. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए :

5

ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा । प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का यह अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है । उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी । शायद उस दिन वह मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा । तब तक इस बात से छोटे बच्चों को परिचित करा देना वांछनीय जान पड़ता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है । बृहत्तर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों को बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बाढ़ को रोकना मनुष्यत्व का तक्राज़ा । मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायास-बिना सिखाए-आ जाती है, वह पशुत्व का द्योतक है और अपने को संयत रखना, दूसरों के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है । बच्चे यह जानें तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं ।

Series HRK/1

SET-1

कोड नं.

Code No.

3/1/1

रोल नं.

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **16** हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

संकलित परीक्षा-II

SUMMATIVE ASSESSMENT-II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे]

Time allowed : 3 hours]

[अधिकतम अंक : 90

[Maximum marks : 90

सामान्य निर्देश:

- इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग और घ।
- चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

[P.T.O.]

खंड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

देश की आज़ादी के उनहत्तर वर्ष हो चुके हैं और आज ज़रूरत है अपने भीतर के तर्कप्रिय भारतीयों को जगाने की, पहले नागरिक और फिर उपभोक्ता बनने की। हमारा लोकतंत्र इसलिए बचा है कि हम सवाल उठाते रहे हैं। लेकिन वह बेहतर इसलिए नहीं बन पाया क्योंकि एक नागरिक के रूप में हम अपनी ज़िम्मेदारियों से भागते रहे हैं। किसी भी लोकतांत्रिक प्रणाली की सफलता जनता की जागरूकता पर ही निर्भर करती है।

एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ के अनुसार किसी मंत्री का सबसे प्राथमिक, सबसे पहला जो गुण होना चाहिए वह यह कि वह ईमानदार हो और उसे भ्रष्ट नहीं बनाया जा सके। इतना ही जरूरी नहीं, बल्कि लोग देखें और समझें भी कि यह आदमी ईमानदार है। उन्हें उसकी ईमानदारी में विश्वास भी होना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर हमारे लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन प्रणाली, दल, निर्वाचन ये सब लोकतंत्र के अनिवार्य अंग हैं। पर जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार-विचार ठीक न रहेगा तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और उत्तम राजनीतिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं कर सकता। स्पष्ट है कि लोकतंत्र की भावना को जगाने व संवर्द्धित करने के लिए आधार प्रस्तुत करने की ज़िम्मेदारी राजनीतिक नहीं बल्कि सामाजिक है।

आज़ादी और लोकतंत्र के साथ जुड़े सपनों को साकार करना है, तो सबसे पहले जनता को स्वयं जाग्रत होना होगा। जब तक स्वयं जनता का नेतृत्व पैदा नहीं होता, तब तक कोई भी लोकतंत्र सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। सारी दुनिया में एक भी देश का उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा जिसका उत्थान केवल राज्य की शक्ति द्वारा हुआ हो। कोई भी राज्य बिना लोगों की शक्ति के आगे नहीं बढ़ सकता।

(क) लगभग 70 वर्ष की आजादी के बाद नागरिकों से लेखक की अपेक्षाएँ हैं कि वे :

- (i) समझदार हों
- (ii) प्रश्न करने वाले हों
- (iii) जगी हुई युवा पीढ़ी के हों
- (iv) मजबूत सरकार चाहने वाले हों

(ख) हमारे लोकतांत्रिक देश में अभाव है :

- (i) सौहार्द का
- (ii) सद्भावना का
- (iii) जिम्मेदार नागरिकों का
- (iv) एकमत पार्टी का

(ग) किसी मंत्री की विशेषता होनी चाहिए :

- (i) देश की बागडोर सँभालनेवाला
- (ii) मिलनसार और समझदार
- (iii) सुशिक्षित और धनवान
- (iv) ईमानदार और विश्वसनीय

(घ) किसी भी लोकतंत्र की सफलता निर्भर करती है :

- (i) लोगों में स्वयं ही नेतृत्व भावना हो
- (ii) सत्ता पर पूरा विश्वास हो
- (iii) देश और देशवासियों से प्यार हो
- (iv) समाज-सुधारकों पर भरोसा हो

(ड) लोकतंत्र की भावना को जगाना-बढ़ाना दायित्व है :

- (i) राजनीतिक
- (ii) प्रशासनिक
- (iii) सामाजिक
- (iv) संवैधानिक

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते हैं कि कर्म करें, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अन्तिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बीता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-कर्म के अनुसार, उसके एक-एक अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला-लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित्त में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो आनन्द का उन्मेष होता रहता है- यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोता हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म-ग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच-सोच कर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया।

कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनन्द भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फल-स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित्त में जो तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

(क) कर्म करने वाले को फल न मिलने पर भी पछतावा नहीं होता क्योंकि :

- (i) अंतिम फल पहुँच से दूर होता है
- (ii) प्रयत्न न करने का भी पश्चाताप नहीं होता
- (iii) वह आनन्दपूर्वक काम करता रहता है
- (iv) उसका जीवन संतुष्ट रूप से बीतता है

(ख) घर के बीमार सदस्य का उदाहरण क्यों दिया गया है?

- (i) पारिवारिक कष्ट बताने के लिए
- (ii) नया उपचार बताने के लिए
- (iii) शोक और दुख की अवस्था के लिए
- (iv) सेवा के संतोष के लिए

(ग) 'कर्मण्य' किसे कहा गया है?

- (i) जो काम करता है
- (ii) जो दूसरों से काम करवाता है
- (iii) जो काम करने में आनन्द पाता है
- (iv) जो उच्च और पवित्र कर्म करता है

(घ) कर्मवीर का सुख किसे माना गया है :

- (i) अत्याचार का दमन
- (ii) कर्म करते रहना
- (iii) कर्म करने से प्राप्त संतोष
- (iv) फल के प्रति तिरस्कार भावना

(ङ) गीता के किस उपदेश की ओर संकेत है :

- (i) कर्म करें तो फल मिलेगा
- (ii) कर्म की बात करना सरल है
- (iii) कर्म करने से संतोष होता है
- (iv) कर्म करें फल की चिंता नहीं

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

सूख रहा है समय
इसके हिस्से की रेत
उड़ रही है आसमान में
सूख रहा है
आँगन में रखा पानी का गिलास
पँखुरी की साँस सूख रही है
जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी
उससे अब हाँफने की आवाज आती है
हर पौधा सूख रहा है
हर नदी इतिहास हो रही है

हर तालाब का सिमट रहा है कोना
यही एक मनुष्य का कंठ सूख रहा है
वह जेब से निकालता है पैसे और
खरीद रहा है बोतल बंद पानी
बाकी जीव क्या करेंगे अब
न उनके पास जेब है न बोतल बंद पानी।

(क) 'सूख रहा है समय' कथन का आशय है :

- (i) गर्मी बढ़ रही है
- (ii) जीवनमूल्य समाप्त हो रहे हैं
- (iii) फूल मुरझाने लगे हैं
- (iv) नदियाँ सूखने लगी हैं

(ख) हर नदी के इतिहास होने का तात्पर्य है-

- (i) नदियों के नाम इतिहास में लिखे जा रहे हैं
- (ii) नदियों का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है
- (iii) नदियों का इतिहास रोचक है
- (iv) लोगों को नदियों की जानकारी नहीं है

(ग) "पँखुरी की साँस सूख रही है

जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी"

ऐसी परिस्थिति किस कारण उत्पन्न हुई?

- (i) मौसम बदल रहे हैं
- (ii) अब पक्षी के पास सुंदर चोंच नहीं रही
- (iii) पतझड़ के कारण पत्तियाँ सूख रही थीं
- (iv) अब प्रकृति की ओर कोई ध्यान नहीं देता

(घ) कवि के दर्द का कारण है :

- (i) पंखुरी की साँस सूख रही है
- (ii) पक्षी हाँफ रहा है
- (iii) मानव का कंठ सूख रहा है
- (iv) प्रकृति पर संकट मँडरा रहा है

(ङ) 'बाकी जीव क्या करेंगे अब' कथन में व्यंग्य है :

- (i) जीव मनुष्य की सहायता नहीं कर सकते
- (ii) जीवों के पास अपने बचाव के कृत्रिम उपाय नहीं हैं
- (iii) जीव निराश और हताश बैठे हैं
- (iv) जीवों के बचने की कोई उम्मीद नहीं रही,

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

नदी में नदी का अपना कुछ भी नहीं
जो कुछ है
सब पानी का है।
जैसे पोथियों में उनका अपना
कुछ नहीं होता
कुछ अक्षरों का होता है
कुछ ध्वनियों और शब्दों का
कुछ पेड़ों का कुछ धागों का
कुछ कवियों का
जैसे चूल्हे में चूल्हे का अपना

कुछ भी नहीं होता
न जलावन, न आँच, न राख
जैसे दीये में दीये का
न रुई, न उसकी बाती
न तेल न आग न दियली
वैसे ही नदी में नदी का
अपना कुछ नहीं होता।
नदी न कहीं आती है न जाती है
वह तो पृथ्वी के साथ
सतत पानी-पानी गाती है।
नदी और कुछ नहीं
पानी की कहानी है
जो बूँदों से सुन कर बादलों को सुनानी है।

(क) कवि ने ऐसा क्यों कहा कि नदी का अपना कुछ भी नहीं सब पानी का है।

- (i) नदी का अस्तित्व ही पानी से है
- (ii) पानी का महत्व नदी से ज्यादा है
- (iii) ये नदी का बड़प्पन है
- (iv) नदी की सोच व्यापक है

(ख) पुस्तक-निर्माण के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है-

- (i) ध्वनियों और शब्दों का महत्व है
- (ii) पेड़ों और धागों का योगदान होता है
- (iii) कवियों की कलम उसे नाम देती है
- (iv) पुस्तकालय उसे सुरक्षा प्रदान करता है

- (ग) कवि, पोथी, चूल्हे आदि उदाहरण क्यों दिए गए हैं?
- (i) इन सभी के बहुत से मददगार हैं
 - (ii) हमारा अपना कुछ नहीं
 - (iii) उन्होंने उदारता से अपनी बात कही है
 - (iv) नदी की कमजोरी को दर्शाया है
- (घ) नदी की स्थिरता की बात कौन-सी पंक्ति में कही गई है?
- (i) नदी में नदी का अपना कुछ भी नहीं
 - (ii) वह तो पृथ्वी के साथ सतत पानी-पानी गाती है
 - (iii) नदी न कहीं आती है न जाती है
 - (iv) जो कुछ है सब पानी का है
- (ङ) बूँदें बादलों से क्या कहना चाहती होंगी?
- (i) सूखी नदी और प्यासी धरती की पुकार
 - (ii) भूखे-प्यासे बच्चों की कहानी
 - (iii) पानी की कहानी
 - (iv) नदी की खुशियों की कहानी

खंड 'ख'

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

1×3=3

- (क) जीवन की कुछ चीजें हैं जिन्हें हम कोशिश करके पा सकते हैं।
(आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद भी लिखिए)
- (ख) मोहनदास और गोकुलदास सामान निकालकर बाहर रखते जाते थे।
(संयुक्त वाक्य में बदलिए)
- (ग) हमें स्वयं करना पड़ा और पसीने छूट गए।
(मिश्रवाक्य में बदलिए)

6. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए-

1×4=4

(क) कूजन कुंज में आसपास के पक्षी संगीत का अभ्यास करते हैं।

(कर्मवाच्य में)

(ख) श्यामा द्वारा सुबह-दोपहर के राग बखूबी गाए जाते हैं।

(कर्तृवाच्य में)

(ग) दर्द के कारण वह चल नहीं सकती।

(भाववाच्य में)

(घ) श्यामा के गीत की तुलना बुलबुल के सुगम संगीत से की जाती है।

(कर्तृवाच्य में)

7. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए-

1×4=4

सुभाष पालेकर ने प्राकृतिक खेती की जानकारी अपनी पुस्तकों में दी है।

8. (क) काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए-

1×2=2

- (i) साक्षी रहे संसार करता हूँ प्रतिज्ञा पार्थ मैं,
पूरा करूँगा कार्य सब कथनानुसार यथार्थ मैं।
जो एक बालक को कपट से मार हँसते हैं अभी,
वे शत्रु सत्वर शोक-सागर-मग्न दीखेंगे सभी।
- (ii) साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।

- (ख) (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है? 1
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहै न आनि सुवावै
तू काहै नहिं बेगहीं आवै, तोको कान्ह बुलावै
- (ii) शृंगार रस के स्थायी भाव का नाम लिखिए। 1

खंड 'ग'

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस ज़माने के हैं उस ज़माने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। इसका क्या सबूत कि उस ज़माने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी? सबूत तो प्राकृत के चलने के ही मिलते हैं। प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस ज़माने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिह्न नहीं।

- (क) नाटककारों के समय में प्राकृत ही प्रचलित भाषा थी-लेखक ने इस संबंध में क्या तर्क दिए हैं? दो का उल्लेख कीजिए। 2
- (ख) प्राकृत बोलने वाले को अपढ़ बताना अनुचित क्यों है? 2
- (ग) भवभूति-कालिदास कौन थे? 1

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

2×5=10

- (क) मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के बारे में इंदौर के दिनों की क्या जानकारी दी है?
- (ख) मन्नू भंडारी की माँ धैर्य और सहनशक्ति में धरती से कुछ ज्यादा ही थीं-ऐसा क्यों कहा गया?
- (ग) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को बालाजी के मंदिर का कौन-सा रास्ता प्रिय था और क्यों?
- (घ) संस्कृति कब असंस्कृति हो जाती है और असंस्कृति से कैसे बचा जा सकता है?
- (ङ) कैसा आदमी निठल्ला नहीं बैठ सकता? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपनी ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था।

- (क) 'वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से' का भाव स्पष्ट कीजिए।

2

(ख) मुख्य गायक के अंतरे की जटिल-तान में खो जाने पर संगतकार क्या करता है? 2

(ग) संगतकार, मुख्य गायक को क्या याद दिलाता है? 1

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए- 2×5=10

(क) 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' यह आचरण अब बदलने लगा है- इस पर अपने विचार लिखिए।

(ख) बेटी को 'अंतिम पूँजी' क्यों कहा गया है?

(ग) 'दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं' कथन में किस यथार्थ का चित्रण है?

(घ) 'बहु धनुही तोरी लरिकाई' - यह किसने कहा और क्यों?

(ङ) लक्ष्मण ने शूरवीरों के क्या गुण बताए हैं।

13. 'जल-संरक्षण' से आप क्या समझते हैं? हमें जल-संरक्षण को गंभीरता से लेना चाहिए, क्यों और किस प्रकार? जीवनमूल्यों की दृष्टि से जल-संरक्षण पर चर्चा कीजिए। 5

खंड 'घ'

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए- 10

(क) एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

- सजावट और उत्साह
- कार्यक्रम का सुखद आनन्द
- प्रेरणा

(ख) वन और पर्यावरण

- वन अमूल्य वरदान
- मानव से संबंध
- पर्यावरण के समाधान

(ग) मीडिया की भूमिका

- मीडिया का प्रभाव
- सकारात्मकता और नकारात्मकता
- अपेक्षाएँ

15. पी.वी. सिंधु को पत्र लिखकर रियो ओलंपिक में उसके शानदार खेल के लिए बधाई दीजिए और उनके खेल के बारे में अपनी राय लिखिए।

5

अथवा

अपने क्षेत्र में जल-भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

16. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए :

5

संतोष करना वर्तमान काल की सामयिक आवश्यक प्रासंगिकता है। संतोष का शाब्दिक अर्थ है 'मन की वह वृत्ति या अवस्था जिसमें अपनी वर्तमान दशा में ही मनुष्य पूर्ण सुख अनुभव करता है।' भारतीय मनीषा ने जिस प्रकार संतोष करने के लिए हमें सीख दी है उसी तरह असंतोष करने के लिए भी कहा है। चाणक्य के अनुसार हमें इन तीन उपक्रमों में संतोष नहीं करना चाहिए। जैसे विद्यार्जन में कभी संतोष नहीं करना चाहिए कि बस, बहुत ज्ञान अर्जित कर लिया। इसी तरह जप और दान करने में भी संतोष नहीं करना चाहिए। वैसे संतोष करने के लिए तो कहा गया है- 'जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि

समान।' 'हमें जो प्राप्त हो उसमें ही संतोष करना चाहिए।' 'साधु इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय, मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाए।' संतोष सबसे बड़ा धन है। जीवन में संतोष रहा, शुद्ध-सात्विक आचरण और शुचिता का भाव रहा तो हमारे मन के सभी विकार दूर हो जाएँगे और हमारे अंदर सत्य, निष्ठा, प्रेम, उदारता, दया और आत्मीयता की गंगा बहने लगेगी। आज के मनुष्य की सांसारिकता में बढ़ती लिप्तता, वैश्विक बाजारवाद और भौतिकता की चकाचौंध के कारण संत्रास, कुंठा और असंतोष दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इसी असंतोष को दूर करने के लिए संतोषी बनना आवश्यक हो गया है। सुखी और शांतिपूर्ण जीवन के लिए संतोष सफल औषधि है।

Series HRK/1

SET-2

कोड नं.

Code No.

3/1/2

रोल नं.

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **16** हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

संकलित परीक्षा-II

SUMMATIVE ASSESSMENT-II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे]

Time allowed : 3 hours]

[अधिकतम अंक : 90

[Maximum marks : 90

सामान्य निर्देश:

- इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग और घ।
- चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

[P.T.O.]

खंड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते हैं कि कर्म करें, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अन्तिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बीता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-कर्म के अनुसार, उसके एक-एक अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला-लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित्त में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो आनन्द का उन्मेष होता रहता है- यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोता हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म-ग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच-सोच कर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया।

कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनन्द भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फल-स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित्त में जो तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

(क) कर्म करने वाले को फल न मिलने पर भी पछतावा नहीं होता क्योंकि :

- (i) अंतिम फल पहुँच से दूर होता है
- (ii) प्रयत्न न करने का भी पश्चाताप नहीं होता
- (iii) वह आनन्दपूर्वक काम करता रहता है
- (iv) उसका जीवन संतुष्ट रूप से बीतता है

(ख) घर के बीमार सदस्य का उदाहरण क्यों दिया गया है?

- (i) पारिवारिक कष्ट बताने के लिए
- (ii) नया उपचार बताने के लिए
- (iii) शोक और दुख की अवस्था के लिए
- (iv) सेवा के संतोष के लिए

(ग) 'कर्मण्य' किसे कहा गया है?

- (i) जो काम करता है
- (ii) जो दूसरों से काम करवाता है
- (iii) जो काम करने में आनन्द पाता है
- (iv) जो उच्च और पवित्र कर्म करता है

(घ) कर्मवीर का सुख किसे माना गया है :

- (i) अत्याचार का दमन
- (ii) कर्म करते रहना
- (iii) कर्म करने से प्राप्त संतोष
- (iv) फल के प्रति तिरस्कार भावना

(ड) गीता के किस उपदेश की ओर संकेत है :

- (i) कर्म करें तो फल मिलेगा
- (ii) कर्म की बात करना सरल है
- (iii) कर्म करने से संतोष होता है
- (iv) कर्म करें फल की चिंता नहीं

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

देश की आज़ादी के उनहत्तर वर्ष हो चुके हैं और आज ज़रूरत है अपने भीतर के तर्कप्रिय भारतीयों को जगाने की, पहले नागरिक और फिर उपभोक्ता बनने की। हमारा लोकतंत्र इसलिए बचा है कि हम सवाल उठाते रहे हैं। लेकिन वह बेहतर इसलिए नहीं बन पाया क्योंकि एक नागरिक के रूप में हम अपनी ज़िम्मेदारियों से भागते रहे हैं। किसी भी लोकतांत्रिक प्रणाली की सफलता जनता की जागरूकता पर ही निर्भर करती है।

एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ के अनुसार किसी मंत्री का सबसे प्राथमिक, सबसे पहला जो गुण होना चाहिए वह यह कि वह ईमानदार हो और उसे भ्रष्ट नहीं बनाया जा सके। इतना ही जरूरी नहीं, बल्कि लोग देखें और समझें भी कि यह आदमी ईमानदार है। उन्हें उसकी ईमानदारी में विश्वास भी होना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर हमारे लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन प्रणाली, दल, निर्वाचन ये सब लोकतंत्र के अनिवार्य अंग हैं। पर जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार-विचार ठीक न रहेगा तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और उत्तम राजनीतिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं कर सकता। स्पष्ट है कि लोकतंत्र की भावना को जगाने व संवर्द्धित करने के लिए आधार प्रस्तुत करने की ज़िम्मेदारी राजनीतिक नहीं बल्कि सामाजिक है।

आज़ादी और लोकतंत्र के साथ जुड़े सपनों को साकार करना है, तो सबसे पहले जनता को स्वयं जाग्रत होना होगा। जब तक स्वयं जनता का नेतृत्व पैदा नहीं होता, तब तक कोई भी लोकतंत्र सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। सारी दुनिया में एक भी देश का उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा जिसका उत्थान केवल राज्य की शक्ति द्वारा हुआ हो। कोई भी राज्य बिना लोगों की शक्ति के आगे नहीं बढ़ सकता।

(क) लगभग 70 वर्ष की आज़ादी के बाद नागरिकों से लेखक की अपेक्षाएँ हैं कि वे :

- (i) समझदार हों
- (ii) प्रश्न करने वाले हों
- (iii) जगी हुई युवा पीढ़ी के हों
- (iv) मजबूत सरकार चाहने वाले हों

(ख) हमारे लोकतांत्रिक देश में अभाव है :

- (i) सौहार्द का
- (ii) सद्भावना का
- (iii) जिम्मेदार नागरिकों का
- (iv) एकमत पार्टी का

(ग) किसी मंत्री की विशेषता होनी चाहिए :

- (i) देश की बागडोर सँभालनेवाला
- (ii) मिलनसार और समझदार
- (iii) सुशिक्षित और धनवान
- (iv) ईमानदार और विश्वसनीय

(घ) किसी भी लोकतंत्र की सफलता निर्भर करती है :

- (i) लोगों में स्वयं ही नेतृत्व भावना हो
- (ii) सत्ता पर पूरा विश्वास हो
- (iii) देश और देशवासियों से प्यार हो
- (iv) समाज-सुधारकों पर भरोसा हो

(ङ) लोकतंत्र की भावना को जगाना-बढ़ाना दायित्व है :

- (i) राजनीतिक
- (ii) प्रशासनिक
- (iii) सामाजिक
- (iv) संवैधानिक

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

सूख रहा है समय
इसके हिस्से की रेत
उड़ रही है आसमान में
सूख रहा है
आँगन में रखा पानी का गिलास
पँखुरी की साँस सूख रही है
जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी
उससे अब हाँफने की आवाज आती है
हर पौधा सूख रहा है
हर नदी इतिहास हो रही है
हर तालाब का सिमट रहा है कोना

यही एक मनुष्य का कंठ सूख रहा है
वह जेब से निकालता है पैसे और
खरीद रहा है बोतल बंद पानी
बाकी जीव क्या करेंगे अब
न उनके पास जेब है न बोतल बंद पानी।

(क) 'सूख रहा है समय' कथन का आशय है :

- (i) गर्मी बढ़ रही है
- (ii) जीवनमूल्य समाप्त हो रहे हैं
- (iii) फूल मुरझाने लगे हैं
- (iv) नदियाँ सूखने लगी हैं

(ख) हर नदी के इतिहास होने का तात्पर्य है-

- (i) नदियों के नाम इतिहास में लिखे जा रहे हैं
- (ii) नदियों का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है
- (iii) नदियों का इतिहास रोचक है
- (iv) लोगों को नदियों की जानकारी नहीं है

(ग) "पंखुरी की साँस सूख रही है

जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी"

ऐसी परिस्थिति किस कारण उत्पन्न हुई?

- (i) मौसम बदल रहे हैं
- (ii) अब पक्षी के पास सुंदर चोंच नहीं रही
- (iii) पतझड़ के कारण पत्तियाँ सूख रही थीं
- (iv) अब प्रकृति की ओर कोई ध्यान नहीं देता

(घ) कवि के दर्द का कारण है :

- (i) पंखुरी की साँस सूख रही है
- (ii) पक्षी हाँफ रहा है
- (iii) मानव का कंठ सूख रहा है
- (iv) प्रकृति पर संकट मँडरा रहा है

(ङ) 'बाकी जीव क्या करेंगे अब' कथन में व्यंग्य है :

- (i) जीव मनुष्य की सहायता नहीं कर सकते
- (ii) जीवों के पास अपने बचाव के कृत्रिम उपाय नहीं हैं
- (iii) जीव निराश और हताश बैठे हैं
- (iv) जीवों के बचने की कोई उम्मीद नहीं रही

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

नदी में नदी का अपना कुछ भी नहीं

जो कुछ है

सब पानी का है।

जैसे पौधियों में उनका अपना

कुछ नहीं होता

कुछ अक्षरों का होता है

कुछ ध्वनियों और शब्दों का

कुछ पेड़ों का कुछ धागों का

कुछ कवियों का
जैसे चूल्हे में चूल्हे का अपना
कुछ भी नहीं होता
न जलावन, न आँच, न राख
जैसे दीये में दीये का
न रुई, न उसकी बाती
न तेल न आग न दियली
वैसे ही नदी में नदी का
अपना कुछ नहीं होता।
नदी न कहीं आती है न जाती है
वह तो पृथ्वी के साथ
सतत पानी-पानी गाती है।
नदी और कुछ नहीं
पानी की कहानी है
जो बूँदों से सुन कर बादलों को सुनानी है।

(क) कवि ने ऐसा क्यों कहा कि नदी का अपना कुछ भी नहीं सब पानी का है।

- (i) नदी का अस्तित्व ही पानी से है
- (ii) पानी का महत्व नदी से ज्यादा है
- (iii) ये नदी का बड़प्पन है
- (iv) नदी की सोच व्यापक है

(ख) पुस्तक-निर्माण के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है-

- (i) ध्वनियों और शब्दों का महत्व है
- (ii) पेड़ों और धागों का योगदान होता है
- (iii) कवियों की कलम उसे नाम देती है
- (iv) पुस्तकालय उसे सुरक्षा प्रदान करता है

(ग) कवि, पोथी, चूल्हे आदि उदाहरण क्यों दिए गए हैं?

- (i) इन सभी के बहुत से मददगार हैं
- (ii) हमारा अपना कुछ नहीं
- (iii) उन्होंने उदारता से अपनी बात कही है
- (iv) नदी की कमजोरी को दर्शाया है

(घ) नदी की स्थिरता की बात कौन-सी पंक्ति में कही गई है?

- (i) नदी में नदी का अपना कुछ भी नहीं
- (ii) वह तो पृथ्वी के साथ सतत पानी-पानी गाती है
- (iii) नदी न कहीं आती है न जाती है
- (iv) जो कुछ है सब पानी का है

(ङ) बूँदें बादलों से क्या कहना चाहती होंगी?

- (i) सूखी नदी और प्यासी धरती की पुकार
- (ii) भूखे-प्यासे बच्चों की कहानी
- (iii) पानी की कहानी
- (iv) नदी की खुशियों की कहानी

खंड 'ख'

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

1×3=3

(क) कभी ऐसा वक्त भी आएगा जब हमारा देश विश्वशक्ति होगा ।
(आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद भी लिखिए)

(ख) घर से दूर होने के कारण वे उदास थे।
(संयुक्त वाक्य में बदलिये)

(ग) जब बच्चे उतावले हो रहे थे तब कस्तूरबा की आशंकाएँ भीतर उसे खरोंच रही थीं।
(सरल वाक्य में बदलिये)

6. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए-

1×4=4

(क) बुलबुल रात्रि विश्राम अमरूद की डाल पर करती है। (कर्मवाच्य में)

(ख) कुछ छोटे भूरे पक्षियों द्वारा मंच सम्हाल लिया जाता है। (कर्तृवाच्य में)

(ग) वह रात भर कैसे जागेगी। (भाववाच्य में)

(घ) सात सुरों को इसने गज़ब की विविधता के साथ प्रस्तुत किया। (कर्मवाच्य में)

7. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए-

1×4=4

हिंदुस्तान वह सब कुछ है जो आपने समझ रखा है लेकिन वह इससे भी बहुत ज्यादा है।

8. (क) काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए-

1×2=2

(i) साक्षी रहे संसार करता हूँ प्रतिज्ञा पार्थ मैं,
पूरा करूँगा कार्य सब कथनानुसार यथार्थ मैं।
जो एक बालक को कपट से मार हँसते हैं अभी,
वे शत्रु सत्वर शोक-सागर-मग्न दीखेंगे सभी।

- (ii) साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया दृष्टि-पाने की ओर बढ़ाए।
- (ख) (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है? 1
कबहुँ पलक हरि मूँद लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै
सोवत जानि मौन व्है रहि रहि, करि करि सैन बतावै
इहिं अंतर अकुलाई उठे हरि, जसुमति मधुर गावै।
- (ii) वीर रस का स्थायी भाव लिखिए। 1

खंड 'ग'

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस ज़माने के हैं उस ज़माने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। इसका क्या सबूत कि उस ज़माने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी? सबूत तो प्राकृत के चलने के ही मिलते हैं। प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनो के हजारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस ज़माने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिह्न नहीं।

- (क) नाटककारों के समय में प्राकृत ही प्रचलित भाषा थी-लेखक ने इस संबंध में क्या तर्क दिए हैं? दो का उल्लेख कीजिए। 2
- (ख) प्राकृत बोलने वाले को अपढ़ बताना अनुचित क्यों है? 2
- (ग) भवभूति-कालिदास कौन थे? 1

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

2×5=10

- (क) मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के बारे में इंदौर के दिनों की क्या जानकारी दी?
- (ख) मन्नू भंडारी की माँ धैर्य और सहनशक्ति में धरती से कुछ ज्यादा ही थीं-ऐसा क्यों कहा गया?
- (ग) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को बालाजी के मंदिर का कौन-सा रास्ता प्रिय था और क्यों?
- (घ) संस्कृति कब असंस्कृति हो जाती है और असंस्कृति से कैसे बचा जा सकता है?
- (ङ) कैसा आदमी निठल्ला नहीं बैठ सकता? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपनी ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था।

- (क) 'वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से' का भाव स्पष्ट कीजिए। 2
- (ख) मुख्य गायक के अंतरे की जटिल-तान में खो जाने पर संगतकार क्या करता है? 2
- (ग) संगतकार, मुख्य गायक को क्या याद दिलाता है? 1

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए- 2×5=10

- (क) 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' यह आचरण अब बदलने लगा है- इस पर अपने विचार लिखिए।
- (ख) बेटी को 'अंतिम पूँजी' क्यों कहा गया है?
- (ग) 'दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं' कथन में किस यथार्थ का चित्रण है?
- (घ) 'बहु धनुही तोरी लरिकाई' - यह किसने कहा और क्यों?
- (ङ) लक्ष्मण ने शूरवीरों के क्या गुण बताए हैं।

13. 'जल-संरक्षण' से आप क्या समझते हैं? हमें जल-संरक्षण को गंभीरता से लेना चाहिए, क्यों और किस प्रकार? जीवनमूल्यों की दृष्टि से जल-संरक्षण पर चर्चा कीजिए। 5

खंड 'घ'

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए- 10

- (क) जैसी संगति वैसा स्वभाव
- सद्गुणों का विकास
 - कुसंग से बचाव
 - कैसे करें

(ख) खेल और स्वास्थ्य

- खेलों की उपयोगिता
- खेल और स्वास्थ्य का संबंध
- हमारा कर्तव्य

(ग) हमारे पड़ोसी

- पड़ोसियों का महत्त्व
- हमारा पड़ोसी
- विशेष बातें

15. अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिए कि ग्रीष्मावकाश में विद्यालय में रंगमंच प्रशिक्षण के लिए एक कार्यशाला राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से आयोजित की जाए। इसकी उपयोगिता भी लिखिए।

5

अथवा

अपने चाचा जी को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिए कि वे आपके पिताजी को इस बात के लिए समझाकर राजी करें कि आपको बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए गठित स्वयंसेवकों के साथ जाने के लिए सहमत हों।

16. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए :

5

संतोष करना वर्तमान काल की सामयिक आवश्यक प्रासंगिकता है। संतोष का शाब्दिक अर्थ है 'मन की वह वृत्ति या अवस्था जिसमें अपनी वर्तमान दशा में ही मनुष्य पूर्ण सुख अनुभव करता है।' भारतीय मनीषा ने जिस प्रकार संतोष करने के लिए हमें सीख दी है उसी तरह असंतोष करने के लिए भी कहा है। चाणक्य के अनुसार हमें इन तीन उपक्रमों

में संतोष नहीं करना चाहिए। जैसे विद्यार्जन में कभी संतोष नहीं करना चाहिए कि बस, बहुत ज्ञान अर्जित कर लिया। इसी तरह जप और दान करने में भी संतोष नहीं करना चाहिए। वैसे संतोष करने के लिए तो कहा गया है- ‘जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।’ ‘हमें जो प्राप्त हो उसमें ही संतोष करना चाहिए।’ ‘साधु इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय, मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाए।’ संतोष सबसे बड़ा धन है। जीवन में संतोष रहा, शुद्ध-सात्विक आचरण और शुचिता का भाव रहा तो हमारे मन के सभी विकार दूर हो जाएँगे और हमारे अंदर सत्य, निष्ठा, प्रेम, उदारता, दया और आत्मीयता की गंगा बहने लगेगी। आज के मनुष्य की सांसारिकता में बढ़ती लिप्तता, वैश्विक बाजारवाद और भौतिकता की चकाचौंध के कारण संत्रास, कुंठा और असंतोष दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इसी असंतोष को दूर करने के लिए संतोषी बनना आवश्यक हो गया है। सुखी और शांतिपूर्ण जीवन के लिए संतोष सफल औषधि है।

Series HRK/1

SET-3

कोड नं.

Code No.

3/1/3

रोल नं.

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **16** हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

संकलित परीक्षा-II

SUMMATIVE ASSESSMENT-II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे]

Time allowed : 3 hours]

[अधिकतम अंक : 90

[Maximum marks : 90

सामान्य निर्देश:

- इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग और घ।
- चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

[P.T.O.]

खंड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

देश की आज़ादी के उनहत्तर वर्ष हो चुके हैं और आज ज़रूरत है अपने भीतर के तर्कप्रिय भारतीयों को जगाने की, पहले नागरिक और फिर उपभोक्ता बनने की। हमारा लोकतंत्र इसलिए बचा है कि हम सवाल उठाते रहे हैं। लेकिन वह बेहतर इसलिए नहीं बन पाया क्योंकि एक नागरिक के रूप में हम अपनी ज़िम्मेदारियों से भागते रहे हैं। किसी भी लोकतांत्रिक प्रणाली की सफलता जनता की जागरूकता पर ही निर्भर करती है।

एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ के अनुसार किसी मंत्री का सबसे प्राथमिक, सबसे पहला जो गुण होना चाहिए वह यह कि वह ईमानदार हो और उसे भ्रष्ट नहीं बनाया जा सके। इतना ही जरूरी नहीं, बल्कि लोग देखें और समझें भी कि यह आदमी ईमानदार है। उन्हें उसकी ईमानदारी में विश्वास भी होना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर हमारे लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन प्रणाली, दल, निर्वाचन ये सब लोकतंत्र के अनिवार्य अंग हैं। पर जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार-विचार ठीक न रहेगा तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और उत्तम राजनीतिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं कर सकता। स्पष्ट है कि लोकतंत्र की भावना को जगाने व संवर्द्धित करने के लिए आधार प्रस्तुत करने की ज़िम्मेदारी राजनीतिक नहीं बल्कि सामाजिक है।

आज़ादी और लोकतंत्र के साथ जुड़े सपनों को साकार करना है, तो सबसे पहले जनता को स्वयं जाग्रत होना होगा। जब तक स्वयं जनता का नेतृत्व पैदा नहीं होता, तब तक कोई भी लोकतंत्र सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। सारी दुनिया में एक भी देश का उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा जिसका उत्थान केवल राज्य की शक्ति द्वारा हुआ हो। कोई भी राज्य बिना लोगों की शक्ति के आगे नहीं बढ़ सकता।

(क) लगभग 70 वर्ष की आजादी के बाद नागरिकों से लेखक की अपेक्षाएँ हैं कि वे :

- (i) समझदार हों
- (ii) प्रश्न करने वाले हों
- (iii) जगी हुई युवा पीढ़ी के हों
- (iv) मजबूत सरकार चाहने वाले हों

(ख) हमारे लोकतांत्रिक देश में अभाव है :

- (i) सौहार्द का
- (ii) सद्भावना का
- (iii) जिम्मेदार नागरिकों का
- (iv) एकमत पार्टी का

(ग) किसी मंत्री की विशेषता होनी चाहिए :

- (i) देश की बागडोर सँभालनेवाला
- (ii) मिलनसार और समझदार
- (iii) सुशिक्षित और धनवान
- (iv) ईमानदार और विश्वसनीय

(घ) किसी भी लोकतंत्र की सफलता निर्भर करती है :

- (i) लोगों में स्वयं ही नेतृत्व भावना हो
- (ii) सत्ता पर पूरा विश्वास हो
- (iii) देश और देशवासियों से प्यार हो
- (iv) समाज-सुधारकों पर भरोसा हो

(ड) लोकतंत्र की भावना को जगाना-बढ़ाना दायित्व है :

- (i) राजनीतिक
- (ii) प्रशासनिक
- (iii) सामाजिक
- (iv) संवैधानिक

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते हैं कि कर्म करें, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अन्तिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बीता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-कर्म के अनुसार, उसके एक-एक अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला-लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित्त में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो आनन्द का उन्मेष होता रहता है- यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोता हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म-ग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच-सोच कर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया।

कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनन्द भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फल-स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित्त में जो तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

(क) कर्म करने वाले को फल न मिलने पर भी पछतावा नहीं होता क्योंकि :

- (i) अंतिम फल पहुँच से दूर होता है
- (ii) प्रयत्न न करने का भी पश्चाताप नहीं होता
- (iii) वह आनन्दपूर्वक काम करता रहता है
- (iv) उसका जीवन संतुष्ट रूप से बीतता है

(ख) घर के बीमार सदस्य का उदाहरण क्यों दिया गया है?

- (i) पारिवारिक कष्ट बताने के लिए
- (ii) नया उपचार बताने के लिए
- (iii) शोक और दुख की अवस्था के लिए
- (iv) सेवा के संतोष के लिए

(ग) 'कर्मण्य' किसे कहा गया है?

- (i) जो काम करता है
- (ii) जो दूसरों से काम करवाता है
- (iii) जो काम करने में आनन्द पाता है
- (iv) जो उच्च और पवित्र कर्म करता है

(घ) कर्मवीर का सुख किसे माना गया है :

- (i) अत्याचार का दमन
- (ii) कर्म करते रहना
- (iii) कर्म करने से प्राप्त संतोष
- (iv) फल के प्रति तिरस्कार भावना

(ङ) गीता के किस उपदेश की ओर संकेत है :

- (i) कर्म करें तो फल मिलेगा
- (ii) कर्म की बात करना सरल है
- (iii) कर्म करने से संतोष होता है
- (iv) कर्म करें फल की चिंता नहीं

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

नदी में नदी का अपना कुछ भी नहीं

जो कुछ है

सब पानी का है।

जैसे पोथियों में उनका अपना

कुछ नहीं होता

कुछ अक्षरों का होता है

कुछ ध्वनियों और शब्दों का

कुछ पेड़ों का कुछ धागों का

कुछ कवियों का
जैसे चूल्हे में चूल्हे का अपना
कुछ भी नहीं होता
न जलावन, न आँच, न राख
जैसे दीये में दीये का
न रुई, न उसकी बाती
न तेल न आग न दियली
वैसे ही नदी में नदी का
अपना कुछ नहीं होता।
नदी न कहीं आती है न जाती है
वह तो पृथ्वी के साथ
सतत पानी-पानी गाती है।
नदी और कुछ नहीं
पानी की कहानी है
जो बूँदों से सुन कर बादलों को सुनानी है।

(क) कवि ने ऐसा क्यों कहा कि नदी का अपना कुछ भी नहीं सब पानी का है।

- (i) नदी का अस्तित्व ही पानी से है
- (ii) पानी का महत्व नदी से ज्यादा है
- (iii) ये नदी का बड़प्पन है
- (iv) नदी की सोच व्यापक है

(ख) पुस्तक-निर्माण के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है-

- (i) ध्वनियों और शब्दों का महत्व है
- (ii) पेड़ों और धागों का योगदान होता है
- (iii) कवियों की कलम उसे नाम देती है
- (iv) पुस्तकालय उसे सुरक्षा प्रदान करता है

(ग) कवि, पोथी, चूल्हे आदि उदाहरण क्यों दिए गए हैं?

- (i) इन सभी के बहुत से मददगार हैं
- (ii) हमारा अपना कुछ नहीं
- (iii) उन्होंने उदारता से अपनी बात कही है
- (iv) नदी की कमजोरी को दर्शाया है

(घ) नदी की स्थिरता की बात कौन-सी पंक्ति में कही गई है?

- (i) नदी में नदी का अपना कुछ भी नहीं
- (ii) वह तो पृथ्वी के साथ सतत पानी-पानी गाती है
- (iii) नदी न कहीं आती है न जाती है
- (iv) जो कुछ है सब पानी का है

(ङ) बूँदें बादलों से क्या कहना चाहती होंगी?

- (i) सूखी नदी और प्यासी धरती की पुकार
- (ii) भूखे-प्यासे बच्चों की कहानी
- (iii) पानी की कहानी
- (iv) नदी की खुशियों की कहानी

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1×5=5

सूख रहा है समय
इसके हिस्से की रेत
उड़ रही है आसमान में
सूख रहा है
आँगन में रखा पानी का गिलास
पँखुरी की साँस सूख रही है
जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी
उससे अब हाँफने की आवाज आती है
हर पौधा सूख रहा है
हर नदी इतिहास हो रही है
हर तालाब का सिमट रहा है कोना
यही एक मनुष्य का कंठ सूख रहा है
वह जेब से निकालता है पैसे और
खरीद रहा है बोतल बंद पानी
बाकी जीव क्या करेंगे अब
न उनके पास जेब है न बोतल बंद पानी।

(क) 'सूख रहा है समय' कथन का आशय है :

- (i) गर्मी बढ़ रही है
- (ii) जीवनमूल्य समाप्त हो रहे हैं
- (iii) फूल मुरझाने लगे हैं
- (iv) नदियाँ सूखने लगी हैं

- (ख) हर नदी के इतिहास होने का तात्पर्य है-
- (i) नदियों के नाम इतिहास में लिखे जा रहे हैं
 - (ii) नदियों का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है
 - (iii) नदियों का इतिहास रोचक है
 - (iv) लोगों को नदियों की जानकारी नहीं है
- (ग) “पँखुरी की साँस सूख रही है
जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी”
ऐसी परिस्थिति किस कारण उत्पन्न हुई?
- (i) मौसम बदल रहे हैं
 - (ii) अब पक्षी के पास सुंदर चोंच नहीं रही
 - (iii) पतझड़ के कारण पत्तियाँ सूख रही थीं
 - (iv) अब प्रकृति की ओर कोई ध्यान नहीं देता
- (घ) कवि के दर्द का कारण है :
- (i) पँखुरी की साँस सूख रही है
 - (ii) पक्षी हाँफ रहा है
 - (iii) मानव का कंठ सूख रहा है
 - (iv) प्रकृति पर संकट मँडरा रहा है
- (ङ) ‘बाकी जीव क्या करेंगे अब’ कथन में व्यंग्य है :
- (i) जीव मनुष्य की सहायता नहीं कर सकते
 - (ii) जीवों के पास अपने बचाव के कृत्रिम उपाय नहीं हैं
 - (iii) जीव निराश और हताश बैठे हैं
 - (iv) जीवों के बचने की कोई उम्मीद नहीं रही

खंड 'ख'

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

1×3=3

(क) मैंने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों के अभावग्रस्त जीवन के बारे में मैं सब जानती हूँ।

(आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद भी लिखिए)

(ख) सीधा-सादा किसान सुभाष पालेकर अपनी नेचुरल फार्मिंग से कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला रहा है।

(मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ग) अपने उत्पाद को सीधे ग्राहक को बेचने के कारण किसान को दुगुनी कीमत मिलती है।

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

6. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए-

1×4=4

(क) मैनाओं ने गीत सुनाया।

(कर्मवाच्य में)

(ख) माँ अभी भी खड़ी नहीं हो पाती।

(भाववाच्य में)

(ग) बीमारी के कारण उससे उठा नहीं जाता।

(कर्तृवाच्य में)

(घ) क्या अब चला जाए?

(कर्तृवाच्य में)

7. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए-

1×4=4

मानव सभ्य तभी है जब वह युद्ध से शांति की ओर आगे बढ़े।

8. (क) काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए-

1×2=2

- (i) साक्षी रहे संसार करता हूँ प्रतिज्ञा पार्थ मैं,
पूरा करूँगा कार्य सब कथनानुसार यथार्थ मैं।
जो एक बालक को कपट से मार हँसते हैं अभी,
वे शत्रु सत्वर शोक-सागर-मग्न दीखेंगे सभी।
- (ii) साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया दृष्टि-पाने की ओर बढ़ाए।

(ख) (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है?

1

जसुमति मन अभिलाष करै
कब मेरो लाल घुटुरुवनि रेंगै, कब धरनी पग दवेक धरै।

(ii) करुण रस का स्थायी भाव लिखिए।

1

खंड 'ग'

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस ज़माने के हैं उस ज़माने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। इसका क्या सबूत कि उस ज़माने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी? सबूत तो प्राकृत के चलने के ही मिलते हैं। प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनियों के हजारों ग्रंथ उसमें क्यों

लिखे जाते, और भगवान शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस ज़माने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिह्न नहीं।

- (क) नाटककारों के समय में प्राकृत ही प्रचलित भाषा थी-लेखक ने इस संबंध में क्या तर्क दिए हैं? दो का उल्लेख कीजिए। 2
- (ख) प्राकृत बोलने वाले को अपढ़ बताना अनुचित क्यों है? 2
- (ग) भवभूति-कालिदास कौन थे? 1

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए- 2×5=10

- (क) मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के बारे में इंदौर के दिनों की क्या जानकारी दी?
- (ख) मन्नू भंडारी की माँ धैर्य और सहनशक्ति में धरती से कुछ ज्यादा ही थीं-ऐसा क्यों कहा गया?
- (ग) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को बालाजी के मंदिर का कौन-सा रास्ता प्रिय था और क्यों?
- (घ) संस्कृति कब असंस्कृति हो जाती है और असंस्कृति से कैसे बचा जा सकता है?
- (ङ) कैसा आदमी निठल्ला नहीं बैठ सकता? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपनी ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था।

- (क) 'वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से' का भाव स्पष्ट कीजिए। 2
- (ख) मुख्य गायक के अंतरे की जटिल-तान में खो जाने पर संगतकार क्या करता है? 2
- (ग) संगतकार, मुख्य गायक को क्या याद दिलाता है? 1

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

2×5=10

- (क) 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' यह आचरण अब बदलने लगा है- इस पर अपने विचार लिखिए।
- (ख) बेटी को 'अंतिम पूँजी' क्यों कहा गया है?
- (ग) 'दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं' कथन में किस यथार्थ का चित्रण है?
- (घ) 'बहु धनुही तोरी लरिकाई' - यह किसने कहा और क्यों?
- (ङ) लक्ष्मण ने शूरवीरों के क्या गुण बताए हैं।

13. 'जल-संरक्षण' से आप क्या समझते हैं? हमें जल-संरक्षण को गंभीरता से लेना चाहिए, क्यों और किस प्रकार? जीवनमूल्यों की दृष्टि से जल-संरक्षण पर चर्चा कीजिए।

5

खंड 'घ'

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए-

10

(क) हम होंगे कामयाब

- कामयाबी का अर्थ
- कर्मठ व्यक्ति
- आत्मविश्वासी और दृढ़निश्चय

(ख) शिक्षा-व्यवस्था

- वर्तमान शिक्षा-प्रणाली
- सुधार अपेक्षित
- वांछनीय शिक्षा-व्यवस्था

(ग) स्मार्ट फोन

- स्मार्ट फोन की दुनिया
- मोबाइल संपत्ति और विपत्ति दोनों रूप में
- स्वास्थ्य पर पड़ता प्रभाव

15. अपनी बहन को पत्र लिखकर योगासन करने के लिए प्रेरित कीजिए।

5

अथवा

किसी महिला के साथ बस में हुए अभद्र व्यवहार को रोकने में बस कंडक्टर के साहस और कर्तव्यपरायणता की प्रशंसा करते हुए परिवहन विभाग के प्रबंधक को पत्र लिखिए।

16. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए :

5

संतोष करना वर्तमान काल की सामयिक आवश्यक प्रासंगिकता है। संतोष का शाब्दिक अर्थ है 'मन की वह वृत्ति या अवस्था जिसमें अपनी वर्तमान दशा में ही मनुष्य पूर्ण सुख अनुभव करता है।' भारतीय मनीषा ने जिस प्रकार संतोष करने के लिए हमें सीख दी है उसी तरह असंतोष करने के लिए भी कहा है। चाणक्य के अनुसार हमें इन तीन उपक्रमों में संतोष नहीं करना चाहिए। जैसे विद्यार्जन में कभी संतोष नहीं करना चाहिए कि बस, बहुत ज्ञान अर्जित कर लिया। इसी तरह जप और दान करने में भी संतोष नहीं करना चाहिए। वैसे संतोष करने के लिए तो कहा गया है- 'जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।' 'हमें जो प्राप्त हो उसमें ही संतोष करना चाहिए।' 'साधु इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय, मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाए।' संतोष सबसे बड़ा धन है। जीवन में संतोष रहा, शुद्ध-सात्विक आचरण और शुचिता का भाव रहा तो हमारे मन के सभी विकार दूर हो जाएँगे और हमारे अंदर सत्य, निष्ठा, प्रेम, उदारता, दया और आत्मीयता की गंगा बहने लगेगी। आज के मनुष्य की सांसारिकता में बढ़ती लिप्तता, वैश्विक बाजारवाद और भौतिकता की चकाचौंध के कारण संत्रास, कुंठा और असंतोष दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इसी असंतोष को दूर करने के लिए संतोषी बनना आवश्यक हो गया है। सुखी और शांतिपूर्ण जीवन के लिए संतोष सफल औषधि है।

Series HRK/2

कोड नं.
Code No. 3/2/1

रोल नं.
Roll No.

--	--	--	--	--	--	--

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 15 हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 16 प्रश्न हैं ।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II
SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी
HINDI
(पाठ्यक्रम अ)
(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 90

Time allowed : 3 hours

Maximum Marks : 90

सामान्य निर्देश :

- इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं— क, ख, ग और घ ।
- चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।

www.CentumSure.com

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

नालंदा विश्वविद्यालय भौगोलिक रूप से दक्षिण बिहार-स्थित राजगीर के समीप है । इसके ध्वंसावशेष आज भी बड़ागाँव तक फैले हुए हैं । ऐसा माना जाता है कि नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना बौद्ध संन्यासियों द्वारा की गई थी, जिनका मूल उद्देश्य एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना करना था जो ध्यान व अध्यात्म के लिए उपयुक्त हो । ऐसा माना जाता है कि महात्मा बुद्ध ने नालंदा की कई बार यात्रा की थी । बहरहाल, इस विश्वविद्यालय का निर्माण कब हुआ था इसे लेकर विद्वानों में एक राय नहीं है । लेकिन ऐतिहासिक दस्तावेजों से जानकारी मिलती है कि इस विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्तवंशी शासक कुमारगुप्त ने की थी ।

नालंदा विश्वविद्यालय के अधिकतर छात्र तिब्बतीय बौद्ध-संस्कृतियों — वज्रयान और महायान से सम्बद्ध थे । विश्वविद्यालय-प्रशासन अनुशासन के प्रति जितना कठोर था, शिक्षा को लेकर उतना ही जागरूक, संवेदनशील और सतर्क था । यह इसी से समझा जा सकता है कि प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों को पहले द्वारपाल से वाद-विवाद करना पड़ता था और फिर उसमें उत्तीर्ण होने पर ही उन्हें प्रवेश मिलता था । छात्रों को रहने के लिए छात्रावास की सुविधा उपलब्ध थी । इत्सिंग के लेखन के अनुसार यहाँ होने वाली चर्चाओं में सभी की भागीदारी आवश्यक थी । सभा में मौजूद सभी लोगों के फैसले पर संयुक्त रूप से आम सहमति की आवश्यकता होती थी । विश्वविद्यालय के संचालन के लिए राजाओं द्वारा विशेष अनुदान दिया जाता था लेकिन विश्वविद्यालय के संचालन में उनका किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं था । आश्चर्य यह कि बौद्ध धर्म को न मानने वाले शासक भी इस विश्वविद्यालय को भरपूर अनुदान देते थे । यह शिक्षा के प्रति उनकी अनुरक्ति को ही रेखांकित करता है ।

- (i) बौद्ध संन्यासियों ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना क्यों की थी ?
- (क) ध्यान और अध्यात्म के लिए उपयुक्त व्यवस्था हो सके
 - (ख) राष्ट्र की शैक्षिक व्यवस्था में सुधार हो सके
 - (ग) देश का गौरव बढ़ाया जा सके
 - (घ) महात्मा बुद्ध के सिद्धांतों का प्रचार हो सके
- (ii) नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में क्या **नहीं** कहा गया है ?
- (क) इसके निर्माण के समय को लेकर विचारक एकमत नहीं है
 - (ख) वैश्विक धरोहर में शामिल किया जा चुका है
 - (ग) इसकी स्थापना कुमारगुप्त ने की थी
 - (घ) इसके अवशेष दक्षिण बिहार में पाए जाते हैं
- (iii) इस विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को क्या करना पड़ता था ?
- (क) जागरूक, संवेदनशील और सतर्क होने का प्रमाण देना पड़ता था
 - (ख) लिखित प्रवेश-परीक्षा उत्तीर्ण करना ज़रूरी था
 - (ग) द्वारपाल से वाद-विवाद में अपना सिक्का जमाना पड़ता था
 - (घ) आर्थिक संपन्नता का प्रमाण-पत्र देना पड़ता था
- (iv) बौद्ध धर्म न मानने वाले शासकों की उदारता का पता चलता है
- (क) शिक्षा के प्रति उनकी अनुरक्ति से
 - (ख) उनके द्वारा पर्याप्त अनुदान देने से
 - (ग) उनके द्वारा संचालन करने से
 - (घ) विश्वविद्यालय के किसी भी फैसले पर उनकी सहमति से

(v) विश्वविद्यालय में भारत के अतिरिक्त किन देशों के विद्यार्थी पढ़ने आते थे ?

(क) पाकिस्तान, चीन, श्रीलंका और कोरिया

(ख) जावा, चीन, नेपाल, ईरान और कोरिया

(ग) जावा, चीन, तिब्बत, श्रीलंका और कोरिया

(घ) नेपाल, जापान, तिब्बत, जावा और कोरिया

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

जोश मलीहाबादी अपने खिदमतगार जुगनू को लेकर आश्रम पहुँच गए और बहुत-सी किताबें भी साथ ले गए। जोश कहते हैं, ठाकुर ने मेरी बड़ी आवभगत की। वे लिखते हैं, 'यों तो आश्रम की ज़िंदगी बेहद सादा थी, सुबह-शाम की चहलकदमी, दोनों वक़्त का स्नान, रोज़ की मौसिकी और घने पेड़ों के साए में पढ़ना-पढ़ाना उस आश्रम की ज़िंदगी का ज़रूरी हिस्सा थे जिसे अलग नहीं किया जा सकता था। एक खासियत और थी कि वहाँ मांस नहीं खाया जा सकता था।'

रवींद्रनाथ ठाकुर में एक बात और खास थी – वह यह कि उस दौर में कहीं उनकी बातें आज भी हालात के मुताबिक़ लगती हैं। भारत की जर्जर शिक्षा-व्यवस्था के बारे में उन्होंने कहा था, 'इस देश में हम जिसे स्कूल कहते हैं, वह शिक्षा देने का एक कारख़ाना है। अध्यापक इस कारख़ाने का अंग हैं। साढ़े दस बजे घंटी बजती है और कारख़ाना खुल जाता है। कक्षाएँ चलती रहती हैं और साथ ही अध्यापक का मुँह चलता रहता है। चार बजे कारख़ाना बंद हो जाता है और साथ ही अध्यापक रूपी मशीन भी अपना मुँह बंद कर देती है।' उन्होंने विद्या के दो विभाग माने थे, एक ज्ञान का, दूसरा व्यवहार का।

जोश कहते हैं, 'हरचंद मैं अध्यात्म के दायरे से निकल कर चिंतन की ओर धीरे से मुड़ रहा था, लेकिन ठाकुर की कविताएँ इसके बावजूद मुझको बेहद प्रभावित किया करती थीं। मैं उनके अनुवाद पढ़-पढ़ कर सिर धुना करता था, क्योंकि मैं बंगाली ज़बान नहीं जानता था। अगर मैं बंगाली भाषा से वाकिफ़ होता तो ठाकुर की कविताओं को समझने की तरह समझ सकता लेकिन मुझको इसका बेहद अफ़सोस है कि मैं उनकी कविताओं को अंग्रेज़ी अनुवाद से समझ रहा हूँ, बंगालियों की तरह समझ नहीं सकता।'।

मैं ठाकुर के साथ रहा ही कितना, फिर भी कह सकता हूँ कि धर्म के मामले में वे बड़े ही खुले दिल के थे। निहायत ज़िंदादिल, बेहद शरीफ़, हद से ज़्यादा बेतकल्लुफ़ और खुशमिज़ाज तबियत के इंसान थे।

- (i) आश्रम की ज़िंदगी के बारे में जोश ने कहा
 - (क) वहाँ की ज़िंदगी सरल और नीरस थी
 - (ख) अध्ययन-अध्यापन वहाँ का अहम हिस्सा था
 - (ग) वहाँ की ख़ासियत मांसाहारी भोजन भी था
 - (घ) वहाँ घने पेड़ों के साए में ही रहना पड़ता था
- (ii) रवींद्रनाथ मानते थे कि आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था में अध्यापक और छात्रों के बीच संबंध
 - (क) नीरस और उबाऊ है
 - (ख) गुरु और शिष्य के जैसा है
 - (ग) मशीन और कारख़ाने जैसा है
 - (घ) घनिष्ठता से परिपूर्ण है

(iii) रवींद्रनाथ के अनुसार शिक्षा के सही मायने हैं

- (क) व्यापक ज्ञान प्राप्त करना
- (ख) साहित्यिक ज्ञान में दक्षता
- (ग) सामान्य ज्ञान का उपार्जन
- (घ) ज्ञान और व्यवहार का तालमेल

(iv) जोश को किस बात का दुख था ?

- (क) वे रवींद्रनाथ ठाकुर के साथ ज़्यादा समय नहीं रह पाए
- (ख) उन्हें किन्हीं कारणों से जल्दी लौटना पड़ा
- (ग) उनकी सारी पुस्तकें शांति-निकेतन में ही छूट गईं
- (घ) उन्हें बंगाली भाषा नहीं आती थी

(v) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक हो सकता है

- (क) जोश की यादें
- (ख) जोश मलीहाबादी
- (ग) खिदमतगार जुगनू
- (घ) अध्यात्म से चिंतन तक

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए :

1×5=5

जीवन की आपाधापी में कब वक़्त मिला
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ
जो किया, कहा, माना उसमें क्या बुरा भला ।

जिस दिन मेरी चेतना जगी मैंने देखा
मैं खड़ा हुआ हूँ इस दुनिया के मेले में,
हर एक यहाँ पर एक भुलाने में भूला
हर एक लगा है अपनी-अपनी दे-ले में
कुछ देर रहा हक्का-बक्का, भौंचक्का-सा,
आ गया कहाँ, क्या करूँ यहाँ, जाऊँ किस ज़ा ?
फिर भी एक तरफ़ से आया ही तो धक्का-सा
मैंने भी बहना शुरू किया उस रेले में,
क्या बाहर की ठेला-पेली ही कुछ कम थीं,
जो भीतर भी भावों का ऊहापोह मचा,
जो किया, उसी को करने की मज़बूरी थी,
जो कहा, वही मन के अंदर से उबल चला,
जीवन की आपाधापी में कब वक़्त मिला
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ
जो किया, कहा, माना उसमें क्या बुरा भला ।

- (i) जीवन की आपाधापी में मानव को किसके लिए समय **नहीं** मिला ?
- (क) आत्मविश्लेषण करने का
 - (ख) अपना भला सोचने का
 - (ग) दूसरों के बारे में सोचने का
 - (घ) कहीं पर बैठने का
- (ii) चेतना जागने पर कवि ने क्या महसूस **नहीं** किया ?
- (क) वह दुनिया के मेले में अकेला खड़ा है
 - (ख) यहाँ सभी एक-दूसरे से गिले-शिकवे कर रहे हैं
 - (ग) सब लेन-देन में व्यस्त हैं
 - (घ) हर व्यक्ति अपने अस्तित्व को भी भूल गया है
- (iii) कवि हक्का-बक्का क्यों है ?
- (क) मेले के ठाठ-बाट उसे आकर्षित कर रहे थे
 - (ख) उसका मित्र नहीं मिल रहा था
 - (ग) उसे अपना गंतव्य नहीं मिल रहा था
 - (घ) मेले में अपने लोग मिल गए थे
- (iv) 'क्या बाहर की ठेला-पेली ही कुछ कम थीं,
जो भीतर भी भावों का ऊहापोह मचा' – का भाव है
- (क) ठेलों पर सामान बिक रहा था और जेब में पैसा नहीं था
 - (ख) भावनाओं की ऊहापोह से हैरान-परेशान था
 - (ग) रेलम-पेल में अपने को छोड़ दिया
 - (घ) भागमभाग के बीच भी मन के भाव कविता लिखने को उकसाते थे
- (v) 'मन के अंदर से उबल चला' से क्या अभिप्राय है ?
- (क) मन की भावनाओं पर उसका अंकुश नहीं है
 - (ख) वह भीड़-भाड़ से क्रोधित हो गया
 - (ग) वह दुनिया के ताम-झाम में फँस गया
 - (घ) उसका मन इधर-उधर भटक रहा था

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

मकान चाहे कच्चे थे,
लेकिन रिश्ते सारे सच्चे थे
चारपाई पर बैठते थे
पास-पास रहते थे ...
सोफ़े और डबल बैड आ गए
दूरियाँ हमारी बढ़ा गए ...
छतों पर अब न सोते हैं
बात-बतंगड़ अब न होते हैं ...
आँगन में वृक्ष थे
साझे सुख-दुख थे ...
दरवाज़ा खुला रहता था
राही भी आ बैठता था ...
कौवे भी काँवते थे
मेहमान आते-जाते थे ...
एक साइकिल ही पास था
फिर भी मेल-जोल था ...
रिश्ते निभाते थे
रूठते मनाते थे ...
पैसा चाहे कम था
माथे पर न ग़म था ...
मकान चाहे कच्चे थे
रिश्ते सारे सच्चे थे ...
अब शायद कुछ पा लिया है,
पर लगता है कि बहुत कुछ गँवा दिया है ...

- (i) रिश्तों में दरारें कब पड़ गई ?
- (क) जब पक्के मकानों में दिखावे ने अपनी जगह बनाई
 - (ख) जब छतों पर लोगों ने सोना शुरू कर दिया
 - (ग) जब कच्चे मकानों में पड़ोसी ज़बरन आ गए
 - (घ) लोगों ने अपने-अपने घर दूर-दूर बना लिए
- (ii) आँगन में वृक्ष थे
- साझे सुख-दुख थे ... – का भावार्थ है
- (क) वृक्ष के नीचे ही दुख झेलते थे
 - (ख) वृक्ष के नीचे ही सुख पाते थे
 - (ग) आँगन का वृक्ष सुख-दुख का साझीदार था
 - (घ) आँगन के वृक्ष पर सबका अधिकार था
- (iii) कवि कच्चे घरों वाले समय को आज भी बेहतर क्यों मानता है ?
- (क) रिश्तों में अपनत्व और गर्माहट के कारण
 - (ख) एक साइकिल होने से प्रदूषण में कमी के कारण
 - (ग) दरवाज़ा खुला रहने पर भी चोरी न होने के कारण
 - (घ) छतों पर बात-बतंगड़ होने के कारण
- (iv) 'रिश्ते निभाते/रूठते मनाते थे' ... कथन से कवि किस तथ्य को उजागर करना चाहता है ?
- (क) स्वार्थ
 - (ख) अहंकार
 - (ग) परस्पर सौहार्द
 - (घ) हर्षोल्लास
- (v) कवि भावुक क्यों हो उठा है ?
- (क) उसने अपना परिवार खो दिया है
 - (ख) अब सद्भावना नहीं दिखती है
 - (ग) अब धैर्य और आशा नहीं है
 - (घ) पैसे का अभाव हो गया है

5. निर्देशानुसार कीजिए : 1×3=3
- (क) हवा में थोड़ी गर्मी आई तब ठठेरा कॉपरस्मिथ की ताल-कचेरी शुरू हो जाती है ।
(वाक्य का भेद लिखिए)
- (ख) मझोले आकार का यह पक्षी बहुत सजीला होता है । (मिश्र वाक्य बनाइए)
- (ग) हम पक्षी को उसकी मीठी आवाज़ से पहचानते हैं । (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
6. निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तित कीजिए : 1×4=4
- (क) तोते उन्मुक्त किलकारियाँ भरते हुए शोर मचाते हैं । (कर्मवाच्य में)
- (ख) तोतों और मैनाओं द्वारा भी सभा की जाती है । (कर्तृवाच्य में)
- (ग) बच्चे तेज़ दौड़ते हैं । (भाववाच्य में)
- (घ) बीमारी के कारण उससे उठा नहीं जाता । (कर्तृवाच्य में)
7. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए : 1×4=4
- संसार में दुश्मन कोई नहीं । चंचल मन ही आपका अपना दुश्मन है ।
8. (क) निम्नलिखित काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए : 1×2=2
- (i) अथवा अधिक कहना वृथा है, पार्थ का प्रण है यही
साक्षी रहे सुन ये वचन रवि, शशि, अनल, अंबर, मही ।
सूर्यास्त से पहले न जो मैं कल जयद्रथ – वध करूँ,
तो शपथ करता हूँ स्वयं मैं ही अनल में जल मरूँ ।
- (ii) भूख से सूख ओंठ जब जाते
दाता-भाग्यविधाता से क्या पाते ?
चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए ।

(ख) (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है ?

1

हरि किलकत जसुमति की कनियाँ ।

मुख में तीनि लोक दिखाए, चकित भई नंद-रनियाँ ।

(ii) करुण रस का स्थायी भाव लिखिए ।

1

खण्ड ग

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2+2+1=5

अत्रि की पत्नी पत्नी-धर्म पर व्याख्यान देते समय घंटों पांडित्य प्रकट करे, गार्गी बड़े-बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दे, मंडन मिश्र की सहधर्मचारिणी शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दे ! ग़ज़ब ! इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकेगी ! यह सब पापी पढ़ने का अपराध है । न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुक़ाबला करतीं । यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने ही का कुफल है । समझे ? स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूँट ! ऐसी ही दलीलों और दृष्टान्तों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं ।

(क) लेखक ने शिक्षित स्त्रियों की योग्यता के क्या प्रमाण दिए हैं ?

(ख) स्त्रियों को अपढ़ रखकर क्या भारत का गौरव बढ़ाना संभव है ? अपने विचार प्रकट कीजिए ।

(ग) लोगों ने स्त्रियों के पढ़ाने का कुफल क्या बताया है ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2×5=10

(क) मन्नू भंडारी के पिताजी की स्वाभाविक प्रवृत्ति कैसे थी ?

(ख) स्त्री-शिक्षा के पक्ष में एक तर्क पाठ के आधार पर दीजिए ।

(ग) बिस्मिल्ला खाँ अपनी शहनाई-वादन की कला को खुदा की मेहरबानी मानते हैं । कारण स्पष्ट कीजिए ।

(घ) पेट भरा और तन ढँका होने पर भी मनुष्य को नींद न आने का क्या कारण रहा होगा ?

(ङ) रूस का भाग्यविधाता किसे कहा गया है और क्यों ?

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2+2+1=5

यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए ।

- (क) संगतकार मुख्य-गायक को क्या अहसास कराना चाहता है ?
- (ख) संगतकार की आवाज़ में कौन-सी हिचक दिखाई देती है ? क्यों ?
- (ग) कैसी कोशिश को मानवता माना है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2×5=10

- (क) 'कन्यादान' कविता में 'पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' — कहकर माँ क्या समझाना चाहती है ?
- (ख) वस्त्र और आभूषणों को शाब्दिक-भ्रम किसलिए कहा गया है ?
- (ग) 'छाया मत छूना' कविता में क्या संदेश निहित है ?
- (घ) 'केवल मुनि जड़ जानहि मोहीं' — परशुराम के इस कथन में समाज की किस भावना की ओर संकेत है ?
- (ङ) धनुष को तोड़ने वाला कोई आपका दास होगा — ऐसा कब और क्यों कहा गया ?

13. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है ? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए ? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आलोक में जीवन-मूल्यों के आधार पर उत्तर दीजिए ।

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

10

(क) शिक्षा का गिरता स्तर

- शिक्षा का उद्देश्य
- वर्तमान शिक्षा-प्रणाली
- पुस्तकीय ज्ञान

(ख) मन के हारे हार है मन के जीते जीत

- निराशा मानव के लिए अभिशाप
- उत्साह के अनुकूल परिणाम
- आशावादी होने के लाभ

(ग) बाल-मज़दूरी

- बाल-मज़दूरी की विवशता
- समाज की भूमिका
- सरकार द्वारा उठाए गए क़दम

15. साक्षी मलिक को पत्र लिखकर रियो ओलंपिक में कुश्ती में उसके शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दीजिए ।

5

अथवा

पुलिस वाले के सद्व्यवहार के लिए अपने क्षेत्र के थानाध्यक्ष को पत्र लिखकर उसकी प्रशंसा कीजिए ।

मनुष्य अपने भविष्य के बारे में चिंतित है। सभ्यता की अग्रगति के साथ ही चिंताजनक अवस्था उत्पन्न होती जा रही है। इस व्यावसायिक युग में उत्पादन की होड़ लगी हुई है। कुछ देश विकसित कहे जाते हैं, कुछ विकासोन्मुख। विकसित देश वे हैं जहाँ आधुनिक तकनीक का पूर्ण उपयोग हो रहा है। ऐसे देश नाना प्रकार की सामग्री का उत्पादन करते हैं और उस सामग्री की खपत के लिए बाज़ार ढूँढ़ते रहते हैं। अत्यधिक उत्पादन-क्षमता के कारण ही ये देश विकसित और अमीर हैं। विकासोन्मुख या गरीब देश उनके समान ही उत्पादन करने की आकांक्षा रखते हैं और इसलिए उन सभी आधुनिक तरीकों की जानकारी प्राप्त करते हैं। उत्पादन-क्षमता बढ़ाने का स्वप्न देखते हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि सारे संसार में उन वायुमंडल-प्रदूषण यंत्रों की भीड़ बढ़ने लगी है जो विकास के लिए परम आवश्यक माने जाते हैं। इन विकास-वाहक उपकरणों ने अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। वायुमंडल विषाक्त गैसों में ऐसा भरता जा रहा है कि संसार का सारा पर्यावरण दूषित हो उठा है, जिससे वनस्पतियों तक के अस्तित्व संकटापन्न हो गए हैं। अपने बढ़ते उत्पादन को खपाने के लिए हर शक्तिशाली देश अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ा रहा है और आपसी प्रतिद्वंद्विता इतनी बढ़ गई है कि सभी ने मारक-घातक अस्त्रों का विशाल भंडार बना रखा है।

Series HRK/2

कोड नं.
Code No. 3/2/2

रोल नं.

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 15 हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 16 प्रश्न हैं ।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II

SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे

Time allowed : 3 hours

अधिकतम अंक : 90

Maximum Marks : 90

सामान्य निर्देश :

- इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं— क, ख, ग और घ ।
- चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

जोश मलीहाबादी अपने खिदमतगार जुगनू को लेकर आश्रम पहुँच गए और बहुत-सी किताबें भी साथ ले गए। जोश कहते हैं, ठाकुर ने मेरी बड़ी आवभगत की। वे लिखते हैं, 'यों तो आश्रम की ज़िंदगी बेहद सादा थी, सुबह-शाम की चहलकदमी, दोनों वक्त का स्नान, रोज़ की मौसिकी और घने पेड़ों के साए में पढ़ना-पढ़ाना उस आश्रम की ज़िंदगी का ज़रूरी हिस्सा थे जिसे अलग नहीं किया जा सकता था। एक खासियत और थी कि वहाँ मांस नहीं खाया जा सकता था।'

रवींद्रनाथ ठाकुर में एक बात और खास थी – वह यह कि उस दौर में कही उनकी बातें आज भी हालात के मुताबिक़ लगती हैं। भारत की जर्जर शिक्षा-व्यवस्था के बारे में उन्होंने कहा था, 'इस देश में हम जिसे स्कूल कहते हैं, वह शिक्षा देने का एक कारख़ाना है। अध्यापक इस कारख़ाने का अंग हैं। साढ़े दस बजे घंटी बजती है और कारख़ाना खुल जाता है। कक्षाएँ चलती रहती हैं और साथ ही अध्यापक का मुँह चलता रहता है। चार बजे कारख़ाना बंद हो जाता है और साथ ही अध्यापक रूपी मशीन भी अपना मुँह बंद कर देती है।' उन्होंने विद्या के दो विभाग माने थे, एक ज्ञान का, दूसरा व्यवहार का।

जोश कहते हैं, 'हरचंद मैं अध्यात्म के दायरे से निकल कर चिंतन की ओर धीरे से मुड़ रहा था, लेकिन ठाकुर की कविताएँ इसके बावजूद मुझको बेहद प्रभावित किया करती थीं। मैं उनके अनुवाद पढ़-पढ़ कर सिर धुना करता था, क्योंकि मैं बंगाली ज़बान नहीं जानता था। अगर मैं बंगाली भाषा से वाकिफ़ होता तो ठाकुर की कविताओं को समझने की तरह समझ सकता लेकिन मुझको इसका बेहद अफ़सोस है कि मैं उनकी कविताओं को अंग्रेज़ी अनुवाद से समझ रहा हूँ, बंगालियों की तरह समझ नहीं सकता।'।

मैं ठाकुर के साथ रहा ही कितना, फिर भी कह सकता हूँ कि धर्म के मामले में वे बड़े ही खुले दिल के थे । निहायत ज़िंदादिल, बेहद शरीफ़, हद से ज़्यादा बेतकल्लुफ़ और खुशमिज़ाज तबियत के इंसान थे ।

- (i) आश्रम की ज़िंदगी के बारे में जोश ने कहा
- (क) वहाँ की ज़िंदगी सरल और नीरस थी
 - (ख) अध्ययन-अध्यापन वहाँ का अहम हिस्सा था
 - (ग) वहाँ की खासियत मांसाहारी भोजन भी था
 - (घ) वहाँ घने पेड़ों के साए में ही रहना पड़ता था
- (ii) रवींद्रनाथ मानते थे कि आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था में अध्यापक और छात्रों के बीच संबंध
- (क) नीरस और उबाऊ है
 - (ख) गुरु और शिष्य के जैसा है
 - (ग) मशीन और कारखाने जैसा है
 - (घ) घनिष्ठता से परिपूर्ण है
- (iii) रवींद्रनाथ के अनुसार शिक्षा के सही मायने हैं
- (क) व्यापक ज्ञान प्राप्त करना
 - (ख) साहित्यिक ज्ञान में दक्षता
 - (ग) सामान्य ज्ञान का उपार्जन
 - (घ) ज्ञान और व्यवहार का तालमेल

(iv) जोश को किस बात का दुख था ?

- (क) वे रवींद्रनाथ ठाकुर के साथ ज़्यादा समय नहीं रह पाए
- (ख) उन्हें किन्हीं कारणों से जल्दी लौटना पड़ा
- (ग) उनकी सारी पुस्तकें शांति-निकेतन में ही छूट गईं
- (घ) उन्हें बंगाली भाषा नहीं आती थी

(v) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक हो सकता है

- (क) जोश की यादें
- (ख) जोश मलीहाबादी
- (ग) खिदमतगार जुगनू
- (घ) अध्यात्म से चिंतन तक

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

नालंदा विश्वविद्यालय भौगोलिक रूप से दक्षिण बिहार-स्थित राजगीर के समीप है । इसके ध्वंसावशेष आज भी बड़ागाँव तक फैले हुए हैं । ऐसा माना जाता है कि नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना बौद्ध संन्यासियों द्वारा की गई थी, जिनका मूल उद्देश्य एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना करना था जो ध्यान व अध्यात्म के लिए उपयुक्त हो । ऐसा माना जाता है कि महात्मा बुद्ध ने नालंदा की कई बार यात्रा की थी । बहरहाल, इस विश्वविद्यालय का निर्माण कब हुआ था इसे लेकर विद्वानों में एक राय नहीं है । लेकिन ऐतिहासिक दस्तावेजों से जानकारी मिलती है कि इस विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्तवंशी शासक कुमारगुप्त ने की थी ।

नालंदा विश्वविद्यालय के अधिकतर छात्र तिब्बतीय बौद्ध-संस्कृतियों — वज्रयान और महायान से सम्बद्ध थे । विश्वविद्यालय-प्रशासन अनुशासन के प्रति जितना कठोर था, शिक्षा को लेकर उतना ही जागरूक, संवेदनशील और सतर्क था । यह इसी से समझा जा सकता है कि प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों को पहले द्वारपाल से वाद-विवाद करना पड़ता था और फिर उसमें उत्तीर्ण होने पर ही उन्हें प्रवेश मिलता था । छात्रों को रहने के लिए छात्रावास की सुविधा उपलब्ध थी । इत्सिंग के लेखन के अनुसार यहाँ होने वाली चर्चाओं में सभी की भागीदारी आवश्यक थी । सभा में मौजूद सभी लोगों के फैसले पर संयुक्त रूप से आम सहमति की आवश्यकता होती थी । विश्वविद्यालय के संचालन के लिए राजाओं द्वारा विशेष अनुदान दिया जाता था लेकिन विश्वविद्यालय के संचालन में उनका किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं था । आश्चर्य यह कि बौद्ध धर्म को न मानने वाले शासक भी इस विश्वविद्यालय को भरपूर अनुदान देते थे । यह शिक्षा के प्रति उनकी अनुरक्ति को ही रेखांकित करता है ।

(i) बौद्ध संन्यासियों ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना क्यों की थी ?

- (क) ध्यान और अध्यात्म के लिए उपयुक्त व्यवस्था हो सके
- (ख) राष्ट्र की शैक्षिक व्यवस्था में सुधार हो सके
- (ग) देश का गौरव बढ़ाया जा सके
- (घ) महात्मा बुद्ध के सिद्धांतों का प्रचार हो सके

(ii) नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में क्या **नहीं** कहा गया है ?

- (क) इसके निर्माण के समय को लेकर विचारक एकमत नहीं है
- (ख) वैश्विक धरोहर में शामिल किया जा चुका है
- (ग) इसकी स्थापना कुमारगुप्त ने की थी
- (घ) इसके अवशेष दक्षिण बिहार में पाए जाते हैं

(iii) इस विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को क्या करना पड़ता था ?

- (क) जागरूक, संवेदनशील और सतर्क होने का प्रमाण देना पड़ता था
- (ख) लिखित प्रवेश-परीक्षा उत्तीर्ण करना ज़रूरी था
- (ग) द्वारपाल से वाद-विवाद में अपना सिक्का जमाना पड़ता था
- (घ) आर्थिक संपन्नता का प्रमाण-पत्र देना पड़ता था

(iv) बौद्ध धर्म न मानने वाले शासकों की उदारता का पता चलता है

- (क) शिक्षा के प्रति उनकी अनुरक्ति से
- (ख) उनके द्वारा पर्याप्त अनुदान देने से
- (ग) उनके द्वारा संचालन करने से
- (घ) विश्वविद्यालय के किसी भी फैसले पर उनकी सहमति से

(v) विश्वविद्यालय में भारत के अतिरिक्त किन देशों के विद्यार्थी पढ़ने आते थे ?

- (क) पाकिस्तान, चीन, श्रीलंका और कोरिया
- (ख) जावा, चीन, नेपाल, ईरान और कोरिया
- (ग) जावा, चीन, तिब्बत, श्रीलंका और कोरिया
- (घ) नेपाल, जापान, तिब्बत, जावा और कोरिया

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए :

1×5=5

जीवन की आपाधापी में कब वक़्त मिला
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ
जो किया, कहा, माना उसमें क्या बुरा भला ।

जिस दिन मेरी चेतना जगी मैंने देखा
मैं खड़ा हुआ हूँ इस दुनिया के मेले में,
हर एक यहाँ पर एक भुलाने में भूला
हर एक लगा है अपनी-अपनी दे-ले में
कुछ देर रहा हक्का-बक्का, भौंचक्का-सा,
आ गया कहाँ, क्या करूँ यहाँ, जाऊँ किस ज़ा ?
फिर भी एक तरफ़ से आया ही तो धक्का-सा
मैंने भी बहना शुरू किया उस रेले में,
क्या बाहर की ठेला-पेली ही कुछ कम थीं,
जो भीतर भी भावों का ऊहापोह मचा,
जो किया, उसी को करने की मज़बूरी थी,
जो कहा, वही मन के अंदर से उबल चला,
जीवन की आपाधापी में कब वक़्त मिला
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ
जो किया, कहा, माना उसमें क्या बुरा भला ।

- (i) जीवन की आपाधापी में मानव को किसके लिए समय **नहीं** मिला ?
- (क) आत्मविश्लेषण करने का
 - (ख) अपना भला सोचने का
 - (ग) दूसरों के बारे में सोचने का
 - (घ) कहीं पर बैठने का
- (ii) चेतना जागने पर कवि ने क्या महसूस **नहीं** किया ?
- (क) वह दुनिया के मेले में अकेला खड़ा है
 - (ख) यहाँ सभी एक-दूसरे से गिले-शिकवे कर रहे हैं
 - (ग) सब लेन-देन में व्यस्त हैं
 - (घ) हर व्यक्ति अपने अस्तित्व को भी भूल गया है
- (iii) कवि हक्का-बक्का क्यों है ?
- (क) मेले के ठाठ-बाट उसे आकर्षित कर रहे थे
 - (ख) उसका मित्र नहीं मिल रहा था
 - (ग) उसे अपना गंतव्य नहीं मिल रहा था
 - (घ) मेले में अपने लोग मिल गए थे
- (iv) 'क्या बाहर की ठेला-पेली ही कुछ कम थीं,
जो भीतर भी भावों का ऊहापोह मचा' – का भाव है
- (क) ठेलों पर सामान बिक रहा था और जेब में पैसा नहीं था
 - (ख) भावनाओं की ऊहापोह से हैरान-परेशान था
 - (ग) रेलम-पेल में अपने को छोड़ दिया
 - (घ) भागमभाग के बीच भी मन के भाव कविता लिखने को उकसाते थे
- (v) 'मन के अंदर से उबल चला' से क्या अभिप्राय है ?
- (क) मन की भावनाओं पर उसका अंकुश नहीं है
 - (ख) वह भीड़-भाड़ से क्रोधित हो गया
 - (ग) वह दुनिया के ताम-झाम में फँस गया
 - (घ) उसका मन इधर-उधर भटक रहा था

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

मकान चाहे कच्चे थे,
लेकिन रिश्ते सारे सच्चे थे
चारपाई पर बैठते थे
पास-पास रहते थे ...
सोफ़े और डबल बैड आ गए
दूरियाँ हमारी बढ़ा गए ...
छतों पर अब न सोते हैं
बात-बतंगड़ अब न होते हैं ...
आँगन में वृक्ष थे
साझे सुख-दुख थे ...
दरवाज़ा खुला रहता था
राही भी आ बैठता था ...
कौवे भी काँवते थे
मेहमान आते-जाते थे ...
एक साइकिल ही पास था
फिर भी मेल-जोल था ...
रिश्ते निभाते थे
रूठते मनाते थे ...
पैसा चाहे कम था
माथे पर न ग़म था ...
मकान चाहे कच्चे थे
रिश्ते सारे सच्चे थे ...
अब शायद कुछ पा लिया है,
पर लगता है कि बहुत कुछ गँवा दिया है ...

- (i) रिश्तों में दरारें कब पड़ गई ?
- (क) जब पक्के मकानों में दिखावे ने अपनी जगह बनाई
 - (ख) जब छतों पर लोगों ने सोना शुरू कर दिया
 - (ग) जब कच्चे मकानों में पड़ोसी ज़बरन आ गए
 - (घ) लोगों ने अपने-अपने घर दूर-दूर बना लिए
- (ii) आँगन में वृक्ष थे
- साझे सुख-दुख थे ... – का भावार्थ है
- (क) वृक्ष के नीचे ही दुख झेलते थे
 - (ख) वृक्ष के नीचे ही सुख पाते थे
 - (ग) आँगन का वृक्ष सुख-दुख का साझीदार था
 - (घ) आँगन के वृक्ष पर सबका अधिकार था
- (iii) कवि कच्चे घरों वाले समय को आज भी बेहतर क्यों मानता है ?
- (क) रिश्तों में अपनत्व और गर्माहट के कारण
 - (ख) एक साइकिल होने से प्रदूषण में कमी के कारण
 - (ग) दरवाज़ा खुला रहने पर भी चोरी न होने के कारण
 - (घ) छतों पर बात-बतंगड़ होने के कारण
- (iv) 'रिश्ते निभाते/रूठते मनाते थे' ... कथन से कवि किस तथ्य को उजागर करना चाहता है ?
- (क) स्वार्थ
 - (ख) अहंकार
 - (ग) परस्पर सौहार्द
 - (घ) हर्षोल्लास
- (v) कवि भावुक क्यों हो उठा है ?
- (क) उसने अपना परिवार खो दिया है
 - (ख) अब सद्भावना नहीं दिखती है
 - (ग) अब धैर्य और आशा नहीं है
 - (घ) पैसे का अभाव हो गया है

5. निर्देशानुसार कीजिए : 1×3=3
- (क) जब सुबह का समय होता है तब पक्षी नीम की फुनगी पर आ टिकते हैं ।
(सरल वाक्य बनाइए)
- (ख) पांगर का मौसम खत्म होते ही यह मेला उठकर सहजन पर आ जाता है ।
(मिश्र वाक्य बनाइए)
- (ग) बाज़ आकर छोटे पक्षियों को झपट लेते हैं । (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
6. निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तित कीजिए : 1×4=4
- (क) फ़ाख़्ताएँ गीतों को सुर देती हैं । (कर्मवाच्य में)
- (ख) फुरसत में मैना द्वारा ख़ूब रियाज़ किया जाता है । (कर्तृवाच्य में)
- (ग) वह पाँव में सूजन के कारण चल नहीं सकती । (भाववाच्य में)
- (घ) बच्ची से साँस नहीं लिया जा रहा था । (कर्तृवाच्य में)
7. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए : 1×4=4
- भले आदमी ! कोई भी व्यक्ति बिना अपना सुधार किए औरों को कैसे सुधारेगा ?
8. (क) निम्नलिखित काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए : 1×2=2
- (i) अथवा अधिक कहना वृथा है, पार्थ का प्रण है यही
साक्षी रहे सुन ये वचन रवि, शशि, अनल, अंबर, मही ।
सूर्यास्त से पहले न जो मैं कल जयद्रथ – वध करूँ,
तो शपथ करता हूँ स्वयं मैं ही अनल में जल मरूँ ।
- (ii) भूख से सूख ओंठ जब जाते
दाता-भाग्यविधाता से क्या पाते ?
चाट रहे जूठी पतल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए ।

(ख) (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है ?

1

किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवागहत ।

बाल-दसा सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावत ।

अंचरा तर लै ढांकि, सूर के प्रभु कौ दूध पियावत ।

(ii) रौद्र रस का स्थायी भाव लिखिए ।

1

खण्ड ग

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2+2+1=5

अत्रि की पत्नी पत्नी-धर्म पर व्याख्यान देते समय घंटों पांडित्य प्रकट करे, गार्गी बड़े-बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दे, मंडन मिश्र की सहधर्मचारिणी शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दे ! ग़ज़ब ! इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकेगी ! यह सब पापी पढ़ने का अपराध है । न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुक़ाबला करतीं । यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने ही का कुफल है । समझे ? स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूँट ! ऐसी ही दलीलों और दृष्टान्तों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं ।

(क) लेखक ने शिक्षित स्त्रियों की योग्यता के क्या प्रमाण दिए हैं ?

(ख) स्त्रियों को अपढ़ रखकर क्या भारत का गौरव बढ़ाना संभव है ? अपने विचार प्रकट कीजिए ।

(ग) लोगों ने स्त्रियों के पढ़ाने का कुफल क्या बताया है ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2×5=10

(क) मन्नू भंडारी के पिताजी की स्वाभाविक प्रवृत्ति कैसे थी ?

(ख) स्त्री-शिक्षा के पक्ष में एक तर्क पाठ के आधार पर दीजिए ।

(ग) बिस्मिल्ला खाँ अपनी शहनाई-वादन की कला को खुदा की मेहरबानी मानते हैं । कारण स्पष्ट कीजिए ।

(घ) पेट भरा और तन ढँका होने पर भी मनुष्य को नींद न आने का क्या कारण रहा होगा ?

(ङ) रूस का भाग्यविधाता किसे कहा गया है और क्यों ?

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2+2+1=5

यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए ।

- (क) संगतकार मुख्य-गायक को क्या अहसास कराना चाहता है ?
- (ख) संगतकार की आवाज़ में कौन-सी हिचक दिखाई देती है ? क्यों ?
- (ग) कैसी कोशिश को मानवता माना है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2×5=10

- (क) 'कन्यादान' कविता में 'पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' — कहकर माँ क्या समझाना चाहती है ?
- (ख) वस्त्र और आभूषणों को शाब्दिक-भ्रम किसलिए कहा गया है ?
- (ग) 'छाया मत छूना' कविता में क्या संदेश निहित है ?
- (घ) 'केवल मुनि जड़ जानहि मोहीं' — परशुराम के इस कथन में समाज की किस भावना की ओर संकेत है ?
- (ङ) धनुष को तोड़ने वाला कोई आपका दास होगा — ऐसा कब और क्यों कहा गया ?

13. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है ? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए ? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आलोक में जीवन-मूल्यों के आधार पर उत्तर दीजिए ।

खण्ड घ

14. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

10

(क) भारतीय किसान

- कृषि-प्रधान देश
- किसान की समस्याएँ
- वर्तमान स्थिति

(ख) नारी के प्रति समाज की सोच

- संकीर्ण सोच
- सोच को बदलना ज़रूरी
- बराबरी का दर्जा

(ग) लोकतंत्र

- लोकतंत्र का अभिप्राय
- नागरिकों की भूमिका
- हमारा दायित्व

15. आप विद्यालय की फुटबॉल टीम के कप्तान हैं और कुछ मित्रों ने आप पर आरोप लगाया है कि आपने एक खिलाड़ी को खेल के आधार पर नहीं, मित्रता के आधार पर चुना है। अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए विद्यालय के खेल-संयोजक को पत्र लिखिए।

5

अथवा

बहन को पत्र लिखकर बताइए कि योगासन सीखना और उनका अभ्यास करना क्यों ज़रूरी है।

मनुष्य अपने भविष्य के बारे में चिंतित है। सभ्यता की अग्रगति के साथ ही चिंताजनक अवस्था उत्पन्न होती जा रही है। इस व्यावसायिक युग में उत्पादन की होड़ लगी हुई है। कुछ देश विकसित कहे जाते हैं, कुछ विकासोन्मुख। विकसित देश वे हैं जहाँ आधुनिक तकनीक का पूर्ण उपयोग हो रहा है। ऐसे देश नाना प्रकार की सामग्री का उत्पादन करते हैं और उस सामग्री की खपत के लिए बाज़ार ढूँढ़ते रहते हैं। अत्यधिक उत्पादन-क्षमता के कारण ही ये देश विकसित और अमीर हैं। विकासोन्मुख या गरीब देश उनके समान ही उत्पादन करने की आकांक्षा रखते हैं और इसलिए उन सभी आधुनिक तरीकों की जानकारी प्राप्त करते हैं। उत्पादन-क्षमता बढ़ाने का स्वप्न देखते हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि सारे संसार में उन वायुमंडल-प्रदूषण यंत्रों की भीड़ बढ़ने लगी है जो विकास के लिए परम आवश्यक माने जाते हैं। इन विकास-वाहक उपकरणों ने अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। वायुमंडल विषाक्त गैसों में ऐसा भरता जा रहा है कि संसार का सारा पर्यावरण दूषित हो उठा है, जिससे वनस्पतियों तक के अस्तित्व संकटापन्न हो गए हैं। अपने बढ़ते उत्पादन को खपाने के लिए हर शक्तिशाली देश अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ा रहा है और आपसी प्रतिद्वंद्विता इतनी बढ़ गई है कि सभी ने मारक-घातक अस्त्रों का विशाल भंडार बना रखा है।

Series HRK/2

कोड नं.
Code No. 3/2/3

रोल नं.
Roll No.

--	--	--	--	--	--	--

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 15 हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 16 प्रश्न हैं ।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II
SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी
HINDI
(पाठ्यक्रम अ)
(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे

Time allowed : 3 hours

अधिकतम अंक : 90

Maximum Marks : 90

सामान्य निर्देश :

- इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं— क, ख, ग और घ ।
- चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।

www.CentumSure.com

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

नालंदा विश्वविद्यालय भौगोलिक रूप से दक्षिण बिहार-स्थित राजगीर के समीप है । इसके ध्वंसावशेष आज भी बड़ागाँव तक फैले हुए हैं । ऐसा माना जाता है कि नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना बौद्ध संन्यासियों द्वारा की गई थी, जिनका मूल उद्देश्य एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना करना था जो ध्यान व अध्यात्म के लिए उपयुक्त हो । ऐसा माना जाता है कि महात्मा बुद्ध ने नालंदा की कई बार यात्रा की थी । बहरहाल, इस विश्वविद्यालय का निर्माण कब हुआ था इसे लेकर विद्वानों में एक राय नहीं है । लेकिन ऐतिहासिक दस्तावेजों से जानकारी मिलती है कि इस विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्तवंशी शासक कुमारगुप्त ने की थी ।

नालंदा विश्वविद्यालय के अधिकतर छात्र तिब्बतीय बौद्ध-संस्कृतियों — वज्रयान और महायान से सम्बद्ध थे । विश्वविद्यालय-प्रशासन अनुशासन के प्रति जितना कठोर था, शिक्षा को लेकर उतना ही जागरूक, संवेदनशील और सतर्क था । यह इसी से समझा जा सकता है कि प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों को पहले द्वारपाल से वाद-विवाद करना पड़ता था और फिर उसमें उत्तीर्ण होने पर ही उन्हें प्रवेश मिलता था । छात्रों को रहने के लिए छात्रावास की सुविधा उपलब्ध थी । इत्सिंग के लेखन के अनुसार यहाँ होने वाली चर्चाओं में सभी की भागीदारी आवश्यक थी । सभा में मौजूद सभी लोगों के फैसले पर संयुक्त रूप से आम सहमति की आवश्यकता होती थी । विश्वविद्यालय के संचालन के लिए राजाओं द्वारा विशेष अनुदान दिया जाता था लेकिन विश्वविद्यालय के संचालन में उनका किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं था । आश्चर्य यह कि बौद्ध धर्म को न मानने वाले शासक भी इस विश्वविद्यालय को भरपूर अनुदान देते थे । यह शिक्षा के प्रति उनकी अनुरक्ति को ही रेखांकित करता है ।

- (i) बौद्ध संन्यासियों ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना क्यों की थी ?
- (क) ध्यान और अध्यात्म के लिए उपयुक्त व्यवस्था हो सके
 - (ख) राष्ट्र की शैक्षिक व्यवस्था में सुधार हो सके
 - (ग) देश का गौरव बढ़ाया जा सके
 - (घ) महात्मा बुद्ध के सिद्धांतों का प्रचार हो सके
- (ii) नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में क्या **नहीं** कहा गया है ?
- (क) इसके निर्माण के समय को लेकर विचारक एकमत नहीं है
 - (ख) वैश्विक धरोहर में शामिल किया जा चुका है
 - (ग) इसकी स्थापना कुमारगुप्त ने की थी
 - (घ) इसके अवशेष दक्षिण बिहार में पाए जाते हैं
- (iii) इस विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को क्या करना पड़ता था ?
- (क) जागरूक, संवेदनशील और सतर्क होने का प्रमाण देना पड़ता था
 - (ख) लिखित प्रवेश-परीक्षा उत्तीर्ण करना ज़रूरी था
 - (ग) द्वारपाल से वाद-विवाद में अपना सिक्का जमाना पड़ता था
 - (घ) आर्थिक संपन्नता का प्रमाण-पत्र देना पड़ता था
- (iv) बौद्ध धर्म न मानने वाले शासकों की उदारता का पता चलता है
- (क) शिक्षा के प्रति उनकी अनुरक्ति से
 - (ख) उनके द्वारा पर्याप्त अनुदान देने से
 - (ग) उनके द्वारा संचालन करने से
 - (घ) विश्वविद्यालय के किसी भी फैसले पर उनकी सहमति से

(v) विश्वविद्यालय में भारत के अतिरिक्त किन देशों के विद्यार्थी पढ़ने आते थे ?

(क) पाकिस्तान, चीन, श्रीलंका और कोरिया

(ख) जावा, चीन, नेपाल, ईरान और कोरिया

(ग) जावा, चीन, तिब्बत, श्रीलंका और कोरिया

(घ) नेपाल, जापान, तिब्बत, जावा और कोरिया

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

जोश मलीहाबादी अपने खिदमतगार जुगनू को लेकर आश्रम पहुँच गए और बहुत-सी किताबें भी साथ ले गए। जोश कहते हैं, ठाकुर ने मेरी बड़ी आवभगत की। वे लिखते हैं, 'यों तो आश्रम की ज़िंदगी बेहद सादा थी, सुबह-शाम की चहलकदमी, दोनों वक़्त का स्नान, रोज़ की मौसिकी और घने पेड़ों के साए में पढ़ना-पढ़ाना उस आश्रम की ज़िंदगी का ज़रूरी हिस्सा थे जिसे अलग नहीं किया जा सकता था। एक खासियत और थी कि वहाँ मांस नहीं खाया जा सकता था।'

रवींद्रनाथ ठाकुर में एक बात और खास थी – वह यह कि उस दौर में कहीं उनकी बातें आज भी हालात के मुताबिक़ लगती हैं। भारत की जर्जर शिक्षा-व्यवस्था के बारे में उन्होंने कहा था, 'इस देश में हम जिसे स्कूल कहते हैं, वह शिक्षा देने का एक कारख़ाना है। अध्यापक इस कारख़ाने का अंग हैं। साढ़े दस बजे घंटी बजती है और कारख़ाना खुल जाता है। कक्षाएँ चलती रहती हैं और साथ ही अध्यापक का मुँह चलता रहता है। चार बजे कारख़ाना बंद हो जाता है और साथ ही अध्यापक रूपी मशीन भी अपना मुँह बंद कर देती है।' उन्होंने विद्या के दो विभाग माने थे, एक ज्ञान का, दूसरा व्यवहार का।

जोश कहते हैं, 'हरचंद मैं अध्यात्म के दायरे से निकल कर चिंतन की ओर धीरे से मुड़ रहा था, लेकिन ठाकुर की कविताएँ इसके बावजूद मुझको बेहद प्रभावित किया करती थीं। मैं उनके अनुवाद पढ़-पढ़ कर सिर धुना करता था, क्योंकि मैं बंगाली ज़बान नहीं जानता था। अगर मैं बंगाली भाषा से वाकिफ़ होता तो ठाकुर की कविताओं को समझने की तरह समझ सकता लेकिन मुझको इसका बेहद अफ़सोस है कि मैं उनकी कविताओं को अंग्रेज़ी अनुवाद से समझ रहा हूँ, बंगालियों की तरह समझ नहीं सकता।'।

मैं ठाकुर के साथ रहा ही कितना, फिर भी कह सकता हूँ कि धर्म के मामले में वे बड़े ही खुले दिल के थे। निहायत ज़िंदादिल, बेहद शरीफ़, हद से ज़्यादा बेतकल्लुफ़ और खुशमिज़ाज तबियत के इंसान थे।

- (i) आश्रम की ज़िंदगी के बारे में जोश ने कहा
 - (क) वहाँ की ज़िंदगी सरल और नीरस थी
 - (ख) अध्ययन-अध्यापन वहाँ का अहम हिस्सा था
 - (ग) वहाँ की ख़ासियत मांसाहारी भोजन भी था
 - (घ) वहाँ घने पेड़ों के साए में ही रहना पड़ता था
- (ii) रवींद्रनाथ मानते थे कि आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था में अध्यापक और छात्रों के बीच संबंध
 - (क) नीरस और उबाऊ है
 - (ख) गुरु और शिष्य के जैसा है
 - (ग) मशीन और कारख़ाने जैसा है
 - (घ) घनिष्ठता से परिपूर्ण है

(iii) रवींद्रनाथ के अनुसार शिक्षा के सही मायने हैं

- (क) व्यापक ज्ञान प्राप्त करना
- (ख) साहित्यिक ज्ञान में दक्षता
- (ग) सामान्य ज्ञान का उपार्जन
- (घ) ज्ञान और व्यवहार का तालमेल

(iv) जोश को किस बात का दुख था ?

- (क) वे रवींद्रनाथ ठाकुर के साथ ज़्यादा समय नहीं रह पाए
- (ख) उन्हें किन्हीं कारणों से जल्दी लौटना पड़ा
- (ग) उनकी सारी पुस्तकें शांति-निकेतन में ही छूट गईं
- (घ) उन्हें बंगाली भाषा नहीं आती थी

(v) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक हो सकता है

- (क) जोश की यादें
- (ख) जोश मलीहाबादी
- (ग) खिदमतगार जुगनू
- (घ) अध्यात्म से चिंतन तक

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : 1×5=5

मकान चाहे कच्चे थे,
लेकिन रिश्ते सारे सच्चे थे
चारपाई पर बैठते थे
पास-पास रहते थे ...
सोफ़े और डबल बैड आ गए
दूरियाँ हमारी बढ़ा गए ...
छतों पर अब न सोते हैं
बात-बतंगड़ अब न होते हैं ...
आँगन में वृक्ष थे
साझे सुख-दुख थे ...
दरवाज़ा खुला रहता था
राही भी आ बैठता था ...
कौवे भी काँवते थे
मेहमान आते-जाते थे ...
एक साइकिल ही पास था
फिर भी मेल-जोल था ...
रिश्ते निभाते थे
रूठते मनाते थे ...
पैसा चाहे कम था
माथे पर न ग़म था ...
मकान चाहे कच्चे थे
रिश्ते सारे सच्चे थे ...
अब शायद कुछ पा लिया है,
पर लगता है कि बहुत कुछ गँवा दिया है ...

- (i) रिश्तों में दरारें कब पड़ गई ?
- (क) जब पक्के मकानों में दिखावे ने अपनी जगह बनाई
 - (ख) जब छतों पर लोगों ने सोना शुरू कर दिया
 - (ग) जब कच्चे मकानों में पड़ोसी ज़बरन आ गए
 - (घ) लोगों ने अपने-अपने घर दूर-दूर बना लिए
- (ii) आँगन में वृक्ष थे
- साझे सुख-दुख थे ... – का भावार्थ है
- (क) वृक्ष के नीचे ही दुख झेलते थे
 - (ख) वृक्ष के नीचे ही सुख पाते थे
 - (ग) आँगन का वृक्ष सुख-दुख का साझीदार था
 - (घ) आँगन के वृक्ष पर सबका अधिकार था
- (iii) कवि कच्चे घरों वाले समय को आज भी बेहतर क्यों मानता है ?
- (क) रिश्तों में अपनत्व और गर्माहट के कारण
 - (ख) एक साइकिल होने से प्रदूषण में कमी के कारण
 - (ग) दरवाज़ा खुला रहने पर भी चोरी न होने के कारण
 - (घ) छतों पर बात-बतंगड़ होने के कारण
- (iv) 'रिश्ते निभाते/रूठते मनाते थे' ... कथन से कवि किस तथ्य को उजागर करना चाहता है ?
- (क) स्वार्थ
 - (ख) अहंकार
 - (ग) परस्पर सौहार्द
 - (घ) हर्षोल्लास
- (v) कवि भावुक क्यों हो उठा है ?
- (क) उसने अपना परिवार खो दिया है
 - (ख) अब सद्भावना नहीं दिखती है
 - (ग) अब धैर्य और आशा नहीं है
 - (घ) पैसे का अभाव हो गया है

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए :

1×5=5

जीवन की आपाधापी में कब वक़्त मिला
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ
जो किया, कहा, माना उसमें क्या बुरा भला ।

जिस दिन मेरी चेतना जगी मैंने देखा
मैं खड़ा हुआ हूँ इस दुनिया के मेले में,
हर एक यहाँ पर एक भुलाने में भूला
हर एक लगा है अपनी-अपनी दे-ले में
कुछ देर रहा हक्का-बक्का, भौंचक्का-सा,
आ गया कहाँ, क्या करूँ यहाँ, जाऊँ किस ज़ा ?
फिर भी एक तरफ़ से आया ही तो धक्का-सा
मैंने भी बहना शुरू किया उस रेले में,
क्या बाहर की ठेला-पेली ही कुछ कम थीं,
जो भीतर भी भावों का ऊहापोह मचा,
जो किया, उसी को करने की मज़बूरी थी,
जो कहा, वही मन के अंदर से उबल चला,
जीवन की आपाधापी में कब वक़्त मिला
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ
जो किया, कहा, माना उसमें क्या बुरा भला ।

- (i) जीवन की आपाधापी में मानव को किसके लिए समय **नहीं** मिला ?
- (क) आत्मविश्लेषण करने का
 - (ख) अपना भला सोचने का
 - (ग) दूसरों के बारे में सोचने का
 - (घ) कहीं पर बैठने का
- (ii) चेतना जागने पर कवि ने क्या महसूस **नहीं** किया ?
- (क) वह दुनिया के मेले में अकेला खड़ा है
 - (ख) यहाँ सभी एक-दूसरे से गिले-शिकवे कर रहे हैं
 - (ग) सब लेन-देन में व्यस्त हैं
 - (घ) हर व्यक्ति अपने अस्तित्व को भी भूल गया है
- (iii) कवि हक्का-बक्का क्यों है ?
- (क) मेले के ठाठ-बाट उसे आकर्षित कर रहे थे
 - (ख) उसका मित्र नहीं मिल रहा था
 - (ग) उसे अपना गंतव्य नहीं मिल रहा था
 - (घ) मेले में अपने लोग मिल गए थे
- (iv) 'क्या बाहर की ठेला-पेली ही कुछ कम थीं,
जो भीतर भी भावों का ऊहापोह मचा' – का भाव है
- (क) ठेलों पर सामान बिक रहा था और जेब में पैसा नहीं था
 - (ख) भावनाओं की ऊहापोह से हैरान-परेशान था
 - (ग) रेलम-पेल में अपने को छोड़ दिया
 - (घ) भागमभाग के बीच भी मन के भाव कविता लिखने को उकसाते थे
- (v) 'मन के अंदर से उबल चला' से क्या अभिप्राय है ?
- (क) मन की भावनाओं पर उसका अंकुश नहीं है
 - (ख) वह भीड़-भाड़ से क्रोधित हो गया
 - (ग) वह दुनिया के ताम-झाम में फँस गया
 - (घ) उसका मन इधर-उधर भटक रहा था

5. निर्देशानुसार कीजिए : 1×3=3
- (क) ऐसा मेला लग जाता है कि गिरते फूलों से पटी सड़क सबको आकर्षित करती है ।
(वाक्य का भेद लिखिए)
- (ख) यहाँ आने वाले तोते और मैनाएँ अब यहाँ नहीं आते । (मिश्र वाक्य में बदलिये)
- (ग) चील की आवाज़ में एक लहर-सी आती है जो धीरे-धीरे हवा में घुल जाती है ।
(संयुक्त वाक्य में बदलिये)
6. निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तित कीजिए : 1×4=4
- (क) ये पत्तियों से कीड़ों को चुगती हैं । (कर्मवाच्य में)
- (ख) आकर्षक विज्ञापन द्वारा पर्यटन को बढ़ावा दिया जाता है । (कर्तृवाच्य में)
- (ग) चोट के बावजूद वह तेज़ भाग सकती है । (भाववाच्य में)
- (घ) आज़ादी के बाद पैदल रास्तों के साथ-साथ सड़कें भी बनाई गईं । (कर्तृवाच्य में)
7. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए : 1×4=4
- हम अपनी त्रुटियों को क्रायम रखते हुए समाज की सेवा नहीं कर सकेंगे ।
8. (क) निम्नलिखित काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए : 1×2=2
- (i) अथवा अधिक कहना वृथा है, पार्थ का प्रण है यही
साक्षी रहे सुन ये वचन रवि, शशि, अनल, अंबर, मही ।
सूर्यास्त से पहले न जो मैं कल जयद्रथ – वध करूँ,
तो शपथ करता हूँ स्वयं मैं ही अनल में जल मरूँ ।
- (ii) भूख से सूख ओंठ जब जाते
दाता-भाग्यविधाता से क्या पाते ?
चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए ।

(ख) (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है ?

1

चलत देखि जसुमति सुख पावै
ठुमकि-ठुमकि पग धरनी रेंगत जननी देखि दिखावै ।

(ii) हास्य रस का स्थायी भाव लिखिए ।

1

खण्ड ग

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2+2+1=5

अत्रि की पत्नी पत्नी-धर्म पर व्याख्यान देते समय घंटों पांडित्य प्रकट करे, गार्गी बड़े-बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दे, मंडन मिश्र की सहधर्मचारिणी शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दे ! ग़ज़ब ! इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकेगी ! यह सब पापी पढ़ने का अपराध है । न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुक़ाबला करतीं । यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने ही का कुफल है । समझे ? स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूँट ! ऐसी ही दलीलों और दृष्टान्तों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं ।

(क) लेखक ने शिक्षित स्त्रियों की योग्यता के क्या प्रमाण दिए हैं ?

(ख) स्त्रियों को अपढ़ रखकर क्या भारत का गौरव बढ़ाना संभव है ? अपने विचार प्रकट कीजिए ।

(ग) लोगों ने स्त्रियों के पढ़ाने का कुफल क्या बताया है ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2×5=10

(क) मन्नू भंडारी के पिताजी की स्वाभाविक प्रवृत्ति कैसे थी ?

(ख) स्त्री-शिक्षा के पक्ष में एक तर्क पाठ के आधार पर दीजिए ।

(ग) बिस्मिल्ला खाँ अपनी शहनाई-वादन की कला को खुदा की मेहरबानी मानते हैं । कारण स्पष्ट कीजिए ।

(घ) पेट भरा और तन ढँका होने पर भी मनुष्य को नींद न आने का क्या कारण रहा होगा ?

(ङ) रूस का भाग्यविधाता किसे कहा गया है और क्यों ?

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2+2+1=5

यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए ।

- (क) संगतकार मुख्य-गायक को क्या अहसास कराना चाहता है ?
- (ख) संगतकार की आवाज़ में कौन-सी हिचक दिखाई देती है ? क्यों ?
- (ग) कैसी कोशिश को मानवता माना है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2×5=10

- (क) 'कन्यादान' कविता में 'पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' — कहकर माँ क्या समझाना चाहती है ?
- (ख) वस्त्र और आभूषणों को शाब्दिक-भ्रम किसलिए कहा गया है ?
- (ग) 'छाया मत छूना' कविता में क्या संदेश निहित है ?
- (घ) 'केवल मुनि जड़ जानहि मोहीं' — परशुराम के इस कथन में समाज की किस भावना की ओर संकेत है ?
- (ङ) धनुष को तोड़ने वाला कोई आपका दास होगा — ऐसा कब और क्यों कहा गया ?

13. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है ? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए ? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आलोक में जीवन-मूल्यों के आधार पर उत्तर दीजिए ।

खण्ड घ

14. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए : 10

(क) संघर्ष और जीवन

- जीवन एक युद्ध-क्षेत्र
- संघर्ष के लिए अपेक्षित इच्छा-शक्ति
- संघर्ष से उपलब्धि

(ख) मच्छरों का प्रकोप

- मच्छरों का साम्राज्य क्यों
- प्रकोप से बीमारियाँ
- समस्या का निदान

(ग) मेरी समस्या का हल

- समस्या
- जटिलता क्यों
- हल क्या हो

15. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए : 5

मनुष्य अपने भविष्य के बारे में चिंतित है। सभ्यता की अग्रगति के साथ ही चिंताजनक अवस्था उत्पन्न होती जा रही है। इस व्यावसायिक युग में उत्पादन की होड़ लगी हुई है। कुछ देश विकसित कहे जाते हैं, कुछ विकासोन्मुख। विकसित देश वे हैं जहाँ आधुनिक तकनीक का पूर्ण उपयोग हो रहा है। ऐसे देश नाना प्रकार की सामग्री का उत्पादन करते हैं और उस सामग्री की खपत के लिए बाज़ार ढूँढ़ते रहते हैं। अत्यधिक उत्पादन-क्षमता के कारण ही ये देश विकसित और अमीर हैं। विकासोन्मुख या गरीब देश उनके समान ही उत्पादन करने की आकांक्षा रखते हैं और इसलिए उन सभी आधुनिक तरीकों की जानकारी प्राप्त करते हैं।

उत्पादन-क्षमता बढ़ाने का स्वप्न देखते हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि सारे संसार में उन वायुमंडल-प्रदूषण यंत्रों की भीड़ बढ़ने लगी है जो विकास के लिए परम आवश्यक माने जाते हैं। इन विकास-वाहक उपकरणों ने अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। वायुमंडल विषाक्त गैसों में ऐसा भरता जा रहा है कि संसार का सारा पर्यावरण दूषित हो उठा है, जिससे वनस्पतियों तक के अस्तित्व संकटापन्न हो गए हैं। अपने बढ़ते उत्पादन को खपाने के लिए हर शक्तिशाली देश अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ा रहा है और आपसी प्रतिद्वंद्विता इतनी बढ़ गई है कि सभी ने मारक-घातक अस्त्रों का विशाल भंडार बना रखा है।

16. माँ को पत्र लिखकर समझाइए कि झूठ बोलना क्यों आवश्यक हो गया था। ऐसा भविष्य में न होने देने का आश्वासन भी दीजिए।

5

अथवा

इस बार रेलगाड़ी से यात्रा करते हुए आपको साफ़-सफ़ाई और अन्य व्यवस्थाओं में क्या अंतर दिखाई पड़ा? इस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए माननीय रेल मंत्री, भारत सरकार को एक पत्र लिखिए।